Hindi (Course A)—2009
Comptt.
Set I—Delhi

निर्धारित समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

निर्देश :

*(i) इस प्रश्न-पत्र के **चार** खण्ड हैं—'क', 'ख', 'ग' और 'घ'।*

*(ii) चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।*

(iii) यथासंभव प्रश्नों के उपभागों के उत्तर क्रमशः दीजिए।

खण्ड 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और इसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

विद्वानों का यह कथन बहुत ठीक है कि विनम्रता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं। इस बात को सब लोग मानते हैं कि आत्मसंस्कार के लिए थोड़ी बहुत मानसिक स्वतंत्रता परमावश्यक है—चाहे उस स्वतंत्रता में अभिमान और नम्रता दोनों का मेल हो और चाहे वह नम्रता ही से उत्पन्न हो। यह बात तो निश्चित है कि जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है उसके लिए वह गुण अनिवार्य है, जिससे आत्मनिर्भरता आती है और जिससे अपने पैरों के बल खड़ा होना आता है। युवा को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि वह बहुत कम बातें जानता है, अपने ही आदर्श से वह बहुत नीचे है और उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने बड़ों का सम्मान करे, छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करे, ये बातें आत्ममर्यादा के लिए आवश्यक हैं। यह सारा संसार, जो कुछ हम हैं और जो कुछ हमारा है—हमारा शरीर, हमारी आत्मा, हमारे कर्म, हमारे भोग, हमारे घर और बाहर की दशा, हमारे बहुत से अवगुण और थोड़े गुण सब इसी बात की आवश्यकता प्रकट करते हैं कि हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए। नम्रता से मेरा अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है जिसके कारण मनुष्य दूसरों का मुँह ताकता है जिससे उसका संकल्प क्षीण और उसकी प्रज्ञा मंद हो जाती है; जिसके कारण आगे बढ़ने के समय भी पीछे रहता है और अवसर पड़ने पर चट-पट किसी बात का निर्णय नहीं कर सकता। मनुष्य का बेड़ा उसके अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर ले जाए। सच्ची आत्मा वही है जो प्रत्येक दशा में प्रत्येक स्थिति के बीच अपनी राह आप निकालती है।

(*i*) विनम्रता और स्वतंत्रता का परस्पर क्या सम्बंध है? 2

(*ii*) मर्यादापूर्वक जीवन जीने के लिए किन गुणों की आवश्यकता है? 2

(*iii*) नम्रता और दब्बूपन में क्या अंतर है? 2

(*iv*) उन कारणों का उल्लेख कीजिए जिनसे मनुष्य आगे बढ़ने की बजाय पीछे रह जाता है। 2

(*v*) 'परमावश्यक' शब्द में संधि-विच्छेद कीजिए। 1

(*vi*) 'नम्रता' शब्द में कौन-सा प्रत्यय लगा है? 1

(*vii*) 'अभिमान' शब्द में कौन-सा उपसर्ग लगा है? 1

(*viii*) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर—(*i*) विनम्रता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है। अर्थात स्वतंत्रता के लिए नम्रता जैसे गुणों का होना परम आवश्यक है। विद्वानों के मतानुसार विनम्रता और स्वतंत्रता का संबंध अन्योन्याश्रित है।

(*ii*) मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिए आत्मनिर्भरता जैसे गुणों का होना परम आवश्यक है। विनम्रता से आत्मनिर्भरता तथा स्वतंत्रता प्राप्त होती है। इसके लिए मानसिक स्वतंत्रता भी परम आवश्यक है। आत्म संस्कार प्राप्त करने वाला व्यक्ति मर्यादा पूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

(*iii*) 1. नम्रता गुण है, दब्बूपन दोष है।

2. नम्रता से आत्मनिर्णय की क्षमता आती है, दब्बू व्यक्ति निर्णय के लिए दूसरों का मुँह देखता है।

3. नम्रता से आत्मनिर्भरता और आत्म संस्कार की भावना का विकास होता है, दब्बूपन से मानसिक परतंत्रता बनी रहती है।

(*iv*) मनुष्य के पिछड़ेपन का मुख्य कारण है—दब्बूपन। दब्बूपन से मनुष्य संकल्प क्षीण हो जाता है, प्रज्ञा मंद हो जाती है। इस प्रकार ऐसा व्यक्ति दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ने की बजाय पीछे जाता है।

(*v*) परमावश्यक = परम + आवश्यक।

(*vi*) नम्रता = नम्र + ता-प्रत्यय।

(*vii*) अभिमान = अभि उपसर्ग + मान।

(*viii*) गद्यांश का शीर्षक—

नम्रता और दब्बूपन या **आत्मनिर्भरता**।

2. नीचे दिए काव्यांशों को पढ़िए और किसी *एक* काव्यांश के प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कुछ भी बन, बस, कायर मत बन।
ठोकर मार, पटक मत माथा, तेरी राह रोकते पाहन।
कुछ भी बन, बस, कायर मत बन।
ले-दे कर जीना क्या जीना, कब तक गम के आँसू पीना
मानवता ने सींचा तुझको, बहा युगों तक खून-पसीना।

कुछ न करेगा? किया करेगा – रे मनुष्य, बस कातर क्रंदन?
कुछ भी बन, बस, कायर मत बन।
'युद्धम् देहि' कहे जब पामर, दे न दुहाई पीठ फेर कर
या तो जीत प्रीत के बल पर या तेरा पग चूमे तस्कर
प्रतिहिंसा भी दुर्बलता है पर कायरता अधिक अपावन।
कुछ भी बन, बस, कायर मत बन।

(*i*) 'ले-देकर जीना क्या जीना' से क्या अभिप्राय है? 2

(*ii*) कवि ने कायरता को अपावन क्यों कहा है? 2

(*iii*) राह में रुकावटें आने पर कवि क्या सलाह देता है? 1

(*iv*) 'प्रतिहिंसा' से क्या तात्पर्य है? 1

(*v*) आशय स्पष्ट कीजिए— 2

मानवता ने सींचा तुझको, बहा युगों तक खून-पसीना।

उत्तर—(*i*) 'ले देकर जीना क्या जीना' पंक्ति से यह आशय है कि रो-पीटकर या घिसी-पिटी ज़िन्दगी जीने से कोई लाभ नहीं है। वीर, साहसी बनकर जीवन जीने से ही मानव जीवन की श्रेष्ठता उजागर होती है।

(*ii*) कवि ने कायरता को अपावन कहा है क्योंकि कायरता मानव-समाज के लिए घृणा का कारण बन जाती है। शत्रु को पीठ दिखाना जीते जी मरने के समान है। अत: कवि ने कायरता को 'अधिक अपावन' कहा है।

(*iii*) राह में रुकावटें आने पर कवि यह सलाह देता है कि माथा न पटक कर उस पत्थर को ठोकर मार कर दूर करो जो तुम्हारे मार्ग को रोकता है।

(*iv*) 'प्रतिहिंसा' से तात्पर्य है—बदला लेना, अथवा बदले की भावना से किया गया प्रहार या संहार।

(*v*) इस पंक्ति का आशय यह है कि मानवता का परिचय देने वाले लोगों ने अपना खून-पसीना एक करके, अर्थात् परिश्रम करके तुम्हें वीर, साहसी तथा संघर्षशील बनने की प्रेरणा दी। अत: कायर की तरह कातर-कंद्रन उचित नहीं है।

अथवा

जग में सचर अचर जितने हैं, सारे कर्म निरत हैं।
धुन है एक-न-एक सभी को सबके निश्चित व्रत हैं।
जीवन पर आतप सह वसुधा पर छाया करता है।
तुच्छ पत्र की भी स्वकर्म में कैसी तत्परता है।
जिस पर गिरकर उदर-दरी से तुमने जन्म लिया है,
जिसका खाकर अन्न सुधासम नीर समीर पिया है।
वही स्नेह की मूर्ति दयामयि माता तुल्य मही है।
उसके प्रति कर्त्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है?
पैदा कर जिस देश-जाति ने तुमको पाला-पोसा,
किए हुए है वह निज हित का तुमसे बड़ा भरोसा।
उससे होना उऋण प्रथम है सत्कर्त्तव्य तुम्हारा,
फिर दे सकते हो वसुधा को शेष स्वजीवन सारा।

(*i*) स्वकर्म में पत्ते की तत्परता को कैसे सराहा गया है? 2

(*ii*) 'स्नेह की मूर्ति' किसे कहा गया है, और क्यों? 2

(*iii*) कौन, किससे निज हित की अपेक्षा रखता है? और वह कैसे पूरी की जा सकती है? 2

(*iv*) आशय स्पष्ट कीजिए— 2

धुन है एक-न-एक सभी को सबके निश्चित व्रत हैं।

उत्तर—(*i*) पत्ता जीवन भर सूर्य की धूप सहन करता है किन्तु धरती पर छाया करके धरती को जलने से बचाता है। पत्ता इतना तुच्छ होकर भी स्वकर्म (अपने कर्त्तव्य) में लगा रहता है और लोगों को प्रेरणा प्रदान करता है।

(*ii*) 'स्नेह की मूर्ति' मातृभूमि को कहा गया है क्योंकि माँ के पेट से पैदा होने के बाद मनुष्य धरती माता से ही अन्न तथा अमृत के समान जल पीकर जीवन बिताता है। धरती पर ही स्वच्छ हवा में साँस लेता है। इस आधार पर मातृभूमि माँ के समान दयामयी प्रतीत होती है। इसलिए मातृभूमि को 'स्नेह की मूर्ति' कहा गया है।

(*iii*) जिस देश और जाति ने मनुष्य को पैदा किया है, उसका पालन-पोषण किया है, उसने अपने हित की अपेक्षा कर रखी है। यह अपेक्षा तब पूरी हो सकती है जब मनुष्य अपना तन-मन-धन अर्पित करके देश की रक्षा करे तथा देश की सेवा में अपना जीवन अर्पित कर दे।

(*iv*) इस पंक्ति का आशय यह है कि इस धरती पर जड़-चेतन जितने भी तत्त्व हैं वे सभी अपने-अपने कार्य में तत्पर रहते हैं। इस प्रकार वे मानव को कर्म करते रहने की प्रेरणा देते हैं।

खण्ड 'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी *एक* विषय पर निबन्ध लिखिए : 10

(क) भ्रष्टाचार-रूपी दानव ने आज हमें चारों ओर से जकड़ रखा है। राजनीति, पुलिस, प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार व्याप्त है। भ्रष्टाचार के कारण बताते हुए उसके निवारण के उपाय भी सुझाइए।

(ख) आप गणतंत्र दिवस की परेड देखने पहली बार राजपथ पर गए। समारोह स्थल तक पहुँचने, परेड देखने और वापस लौटने के अपने अनुभवों का वर्णन कीजिए।

(ग) सरदी की छुट्टियों में आपको पर्वतीय क्षेत्र में रहने वाले मामा जी की लड़की की शादी में जाने का अवसर मिला। विवाह के पश्चात् हुए हिमपात और उससे उत्पन्न सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

उत्तर—(क) **भ्रष्टाचार : कारण और निवारण**

हमारे देश के विकास में भ्रष्टाचार बहुत बड़ी बाधा बनकर उपस्थित हो गया है। जिस प्रकार पेड़ के तने को छेद कर खा जाने वाला कीड़ा हरे-हरे पेड़ों को सुखा देता है, उसी प्रकार राष्ट्र की खुशहाली को भ्रष्टाचार रूपी कीड़ा क्षीण करता है। जिस प्रकार चंद्रमा के ऊपर राहू की छाया पड़ती है तो चंद्रमा तेजहीन बन जाता है, उसी प्रकार भ्रष्टाचार ने राष्ट्र की प्रतिष्ठा को तेजहीन बना दिया है। जैसे दानवी शक्ति दिन-दूनी रात-चौगुनी बढ़ती जाती है, उसी प्रकार भ्रष्टाचार दसों दिशाओं में अपनी जड़ें फैला रहा है।

भ्रष्टाचार का श्रीगणेश राजनीति से होता है। आज के नेता राष्ट्र के नेता नहीं हैं, वे कुर्सी के नेता हैं, स्वार्थ के नेता हैं। कुर्सी प्राप्त करने के लिए और प्राप्त होने पर भ्रष्टाचार का सहारा लेकर वे सुख-समृद्धि के साधन ढूँढते हैं। पुलिस रक्षक कम भक्षक अधिक बन रही है। साधारण रिपोर्ट भी बिना रिश्वत के नहीं लिखी जाती। प्रशासनिक वर्ग भ्रष्टाचार का फलता-फूलता उद्यान है। शिक्षा जैसे पवित्र क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार घुसा पड़ा है। अध्यापक की नियुक्ति हो या स्थानांतरण; सब पैसों का खेल है। स्वास्थ्य संबंधी विभागों में हमेशा अनियमितता देखने को मिलती है। सरकारी अस्पतालों से दवाइयाँ गायब हो जाती हैं क्योंकि दुकानों पर यही दवाएँ अधिक कीमतों में मिलती हैं। चिकित्सक भी सरकारी अस्पतालों में मरीज़ों को देखने की तुलना में प्राइवेट तौर पर देखना अधिक पसंद करते हैं। हर वर्ग भ्रष्टाचार के रंग में रंगा हुआ है।

भ्रष्टाचार का कारण है—मानव की धन-लोलुपता। मानव यह चाहता है कि वह सुख-वैभव का जीवन बिताए। आधुनिक जीवन की सारी सुविधाएँ उसे प्राप्त हो जाएँ। वह जल्द से जल्द देश और दुनिया के रईसों में गिना जाने लगे। समाज में उसका नाम हो, यश हो। लोग उसके आगे-पीछे घूमें तथा उसे सलाम करें। इस भावना से वह भ्रष्टाचार में लिप्त होता जाता है। हमारा कानून इतना लचीला है कि भ्रष्टतंत्र उससे बच जाता है।

भ्रष्टाचार के निवारण हेतु यह आवश्यक है कि समाज और सरकार दोनों को चुस्ती एवं फुर्ती दिखानी होगी। जमाखोरों और भ्रष्ट अधिकारियों के विरुद्ध कठोर से कठोर कानून की व्यवस्था होनी चाहिए। एक नागरिक के रूप में हमारा भी कर्त्तव्य है कि देश को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने में सरकार को सहयोग दें।

(ख) **'गणतंत्र दिवस की परेड'**

भारतवर्ष संसार का सबसे बड़ा गणतंत्र राष्ट्र है। सैंकड़ों वर्षों की गुलामी के बाद 15 अगस्त सन् 1947 को अपना देश स्वतंत्र हुआ। 26 जनवरी सन् 1950 को भारतीय संविधान लागू हुआ। अत: प्रतिवर्ष छब्बीस जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन का पर्व राष्ट्रीय पर्व के रूप में पूरे राष्ट्र में मनाया जाता है। दिल्ली में इस पर्व का आयोजन भव्य रूप में होता है।

गणतंत्र दिवस की परेड शानदार होती है। इसे देखने के लिए देश के कोने-कोने से लोग एकत्र होते हैं। विदेशों से भी लोग परेड देखने के लिए आते हैं। बचपन से गणतंत्र दिवस की परेड के बारे में सुनने और उसकी झाँकी का दृश्य दूरदर्शन के माध्यम से देखने को मिला था किन्तु राजपथ पर जाकर परेड का आँखों-देखा हाल बहुत दिनों की प्रतीक्षा के बाद मिला। राजपथ पर जाने के लिए गाड़ियों की कतारें सुदूर तक एक निश्चित गति एवं निश्चित क्रम में बढ़ रही थीं। चप्पे-चप्पे पर तैनात पुलिस बल तथा सुरक्षाकर्मी देखने को मिले।

कड़ी सुरक्षा के बीच चलते हुए परेड को देखने के लिए मैं अपने निर्धारित स्थान पर बैठ गया। राष्ट्रपति जी ने ध्वजारोहरण किया। इसके बाद सेना की टुकड़ियों ने सलामी दी। राष्ट्रपति जी ने सेना-अध्यक्षों सहित परेड की सलामी ली। परेड में भाग लेने वाले सैनिकों तथा सुरक्षा बलों के कदम से मिलते कदम तथा हाथ एक साथ आगे निकलते तथा पीछे जाते थे। उस समय यह दृश्य देखते ही बनता था। अद्भुत गति, लय, ताल का ऐसा समन्वित रूप मैंने पहले कभी नहीं देखा था। इसके बाद सेनाओं के अस्त्र-शस्त्रों के मॉडलों की झाँकी निकाली गईं। विभिन्न राज्यों की झाँकियाँ एक के बाद एक आती गईं। सभी झाँकियाँ मन को मुग्ध करने वाली थीं। परेड के उपरान्त हवाई जहाज़ों द्वारा तीन रंगों की पट्टियों में निकलने वाला धुआँ तिरंगा बनकर राष्ट्रीय एकता को दर्शा रहा था।

परेड के पश्चात् राष्ट्रपति जी अपनी बग्गी में राष्ट्रपति भवन की ओर रवाना हुए, मुख्य अतिथि तथा अन्य गणमान्य भी

अपने-अपने वाहनों से अपने निवास को चले। भीड़ में से जनता के लिए बने पिछले रास्ते से निकल कर मैं भी अपने घर की ओर बढ़ा।

परेड के इस पूरे दृश्य से मन राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत-प्रोत हो गया।

(ग) **पर्वतीय क्षेत्र में हिमपात**

मैं तीन दिन के बाद घर वापस आया तो देखा की मेज़ पर एक शादी का कार्ड रखा हुआ है। उत्सुकतावश मैंने उसे उठा लिया। पढ़कर तथा नीचे लिखा हुआ पता देखकर ज्ञात हुआ कि यह कार्ड शिमला से मामा जी ने भेजा है। शादी की तिथि सोलह जनवरी निश्चित की गई थी। इधर शीतकालीन अवकाश एक जनवरी से ही आरम्भ हो गया था। मैंने सोचा कि छुट्टियों का भरपूर लाभ उठाते हुए क्यों न एक पंथ दो काज किया जाए। अर्थात् मामाजी की लड़की की शादी में भी शामिल हो लेंगे तथा पर्वत-प्रदेश की हरियाली और श्वेतिमा का आनंद भी लेंगे।

मैं शादी से तीन दिन पूर्व ही शिमला पहुंच गया। घर के कार्यों में हाथ बटाता रहा। मामाजी को सहयोग मिला, वे भी खुश थे और मुझे भी अपनी बहन की शादी में कुछ करने का अवसर मिला, इससे मैं भी अति प्रसन्न था। वहाँ नए मेहमानों से मिलकर, उनके विचार जानकर काफी प्रसन्नता हुई। दिन बीतते गए और शादी की तिथि आ गई। देखते ही देखते शादी का कार्य भी भली प्रकार सम्पन्न हो गया। 17 जनवरी को ठंड बढ़ी। आसमान में तारे साफ दिखाई दे रहे थे। अगली प्रातः जब हम उठे तो बाहर हिमपात हो रहा था। रुई के फाहों जैसी ऊपर से गिरती बर्फ देखते ही बनती थी। सभी लोग अपने घरों से बाहर निकल कर वर्ष के पहले हिमपात का आनन्द ले रहे थे। कुछ बच्चे बर्फ के गोले बना कर एक-दूसरे पर फेंक रहे थे। दूर-दूर तक बिखरी हुई बर्फ ऐसी लगती थी जैसे चीनी ही चीनी दूर-दूर तक फैला दी गई हो। कहीं-कहीं बीच-बीच में छोटे आकार वाले पौधे थे जो बर्फ से ढके अपनी हरियाली को खोकर श्वेतिमा धारण कर चुके थे। ऐसा लगता था जैसे सफ़ेद कम्बल ओढ़कर ठंड से अपनी रक्षा कर रहे हों। वास्तव में बर्फ की मनमोहकता देखकर मन प्रफुल्लित हो उठा। आज भी उस हिमपात का दृश्य मन में ताज़ा हो उठता है। मन बार-बार ऐसे दृश्य को पुनः देखने के लिए लालायित हो उठता है। प्रकृति-सौंदर्य की उस अनंतता के आगे मैं नतमस्तक हूँ।

4. आप अपने विद्यालय की छात्र-सभा के सचिव हैं। 14 सितम्बर को हिंदी-दिवस मनाया जाना है। मुख्य अतिथि के रूप में राजभाषा विभाग, गृह-मंत्रालय के सचिव को बुलाने के लिए पत्र लिखिए। 5

उत्तर—

सचिव, छात्रसभा
केन्द्रीय विद्यालय,
सैनिक विहार
दिल्ली

सेवा में,
सचिव महोदय,
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय
दिल्ली

विषयः हिन्दी दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रण

मान्यवर,

निवेदन है कि आगामी मास सितम्बर की 14 तारीख को हमारे विद्यालय में हिन्दी दिवस का आयोजन किया जा रहा है। आपसे अनुरोध है कि आप इस अवसर पर मुख्य अतिथि का स्थान ग्रहण करें।

अतः आपसे नम्र निवेदन है कि प्रातः 10.00 बजे विद्यालय में पधारने का कष्ट करें।

सधन्यवाद
भवदीय
रामकुमार
सचिव
दिनांक 21.08.09

अथवा

बस-यात्रा के दौरान आपका जो सामान छूट गया था वह 'श्री देवराज', एफ-27, सेक्टर 2, वसंत कुंज, दिल्ली ने आपके पास भिजवाया है। आभार व्यक्त करते हुए उन्हें धन्यवाद-पत्र लिखिए।

उत्तर—

राजपाल
234, मॉडल टाउन
पानीपत

श्री देवराजजी
एफ-27, सेक्टर-2
वसंतकुंज, दिल्ली

महोदय,

मैं आपके प्रयास और परोपकार के लिए धन्यवाद करते हुए आप को सूचित करना चाहता हूँ कि बस यात्रा के दौरान मेरा छूटा हुआ बैग मुझे प्राप्त हो गया है। अधिक कार्यव्यस्तता तथा जल्दबाज़ी के कारण अपना सामान समेटने तथा बस से उतरने में मेरा बैग छूट गया था। घर आकर इस बात का ज्ञान हुआ। यह सोचकर बहुत परेशान हुआ कि बैंक की पासबुक तथा चैकबुक उसी बैग में थीं और कई ज़रूरी काग़ज़ात भी थे।

मैं आपके इस सराहनीय प्रयास के लिए हृदय से आभारी हूँ। भगवान आपका भला करें। मेरे योग्य कोई सेवा हो तो अवश्य सूचित कीजिएगा।

सधन्यवाद

भवदीय

राजपाल

खण्ड 'ग'

5. (क) निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया-पद छाँटकर कर्म के अनुसार क्रिया-भेद लिखिए :

(*i*) सुचित्रा सुबह से सो रही है। 1

(*ii*) महेश ने भी पत्र लिखा है। 1

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में अव्यय छाँटकर उसका भेद भी बताइए :

(*i*) मेरे घर के सामने मैदान है। 1

(*ii*) घोड़ा अचानक रुक गया। 1

उत्तर—(क) (*i*) सो रही है—अकर्मक क्रिया

(*ii*) लिखा है—सकर्मक क्रिया

(ख) (*i*) के सामने—सम्बंधबोधक अव्यय

(*ii*) अचानक—रीतिवाचक क्रियाविशेषण

6. रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए :

(*i*) मोहन ने केला खाया है। 1

(*ii*) सीता दसवीं में हिंदी पढ़ती है। 1

उत्तर—केला — जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक, 'खाया' क्रिया का कर्म।

पढ़ती है—पठ धातु, स्त्रीलिंग, एकवचन, सकर्मक क्रिया, वर्तमान काल, कर्तृवाच्य, 'सीता' कर्त्ता की क्रिया, 'हिन्दी' कर्म की क्रिया।

7. निर्देशानुसार वाक्य बदलिए :

(*i*) झोले वाला लड़का कहाँ गया? (मिश्र वाक्य में) 1

(*ii*) व्यायाम करो। स्वस्थ रहो। (संयुक्त वाक्य में) 1

(*iii*) सोहन भोजन करके सो गया। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए) 1

उत्तर—(*i*) जो लड़का झोले वाला था वह कहाँ गया?

(*ii*) व्यायाम करो और स्वस्थ रहो।

(*iii*) सरल वाक्य।

8. निर्देशानुसार वाच्य बदलिए :

(*i*) बीमारी के कारण वह नहीं दौड़ी। (भाववाच्य में) 1

(*ii*) मोहन से उठा नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में) 1

(*iii*) प्रार्थना-सभा में घोषणा हुई। (कर्मवाच्य में) 1

उत्तर—(*i*) बीमारी के कारण उससे नहीं दौड़ा गया।

(*ii*) मोहन उठ नहीं पाता।

(*iii*) प्रार्थना सभा में घोषणा की गई।

9. निम्नलिखित पंक्तियों में आए रेखांकित पदों के अलंकारों के नाम लिखिए :

(*i*) सजना है मुझे सजना के लिए। 1

(*ii*) वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा-सी। 1

(*iii*) बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। 1

उत्तर—(*i*) यमक अलंकार

(*ii*) उपमा अलंकार

(*iii*) अनुप्रास अलंकार

खण्ड 'घ'

10. निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी *एक* के प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2×3=6

(क) मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही॥

(*i*) गोपियों ने 'नाहीं परत कही' कह कर किस विवशता को व्यक्त किया है?

(*ii*) 'बिरहिनि बिरह दही' क्यों कहा गया है?

(*iii*) गोपियाँ किसको गुहार लगाना चाहती हैं, और क्यों?

उत्तर—(*i*) **सूरदास** द्वारा रचित भ्रमरगीत के इस पद में गोपियों की विवशता '*नाहीं परत कही*' वाक्य द्वारा स्पष्ट हुई है। गोपियाँ यह स्पष्ट करना चाहती हैं कि जब से श्रीकृष्ण गोकुल छोड़कर

मथुरा गए हैं तब से वियोग-जनित उनके (गोपियों के) मन की पीड़ा मन में ही रह जाती है। उसे न कोई सुनने वाला है, और न कहते ही बनता है। यहाँ कुछ न कहने का कारण यह है कि गोपियाँ अपने मुँह से अपने आराध्य श्रीकृष्ण की शिकायत नहीं कर सकतीं। वे प्रेम-भक्ति की मर्यादा का हनन नहीं करना जानती हैं।

(*ii*) '*बिरहिनि बिरह दही*'—वाक्य में रूपक अंलकार का प्रयोग हुआ है। इसका अर्थ है—वियोग की आग में जलना। गोपियाँ श्रीकृष्ण के वियोग या विरहरूपी आग में तिल-तिल करके जलती जा रही हैं। इसका कारण है कि श्रीकृष्ण गोकुल से मथुरा जाते समय शीघ्र वापस आने का वायदा कर गए थे किन्तु वहाँ पहुँचकर न वे वापस आए, न आने का संदेश ही दिया। यहाँ तक कि अपना या गोपियों का कुशल-क्षेम भी नहीं भेजा, न पूछा। उद्धव ने योग-संदेश सुनाकर गोपियों के वियोग की आग और अधिक प्रज्जवलित कर दी। यह भी कहा जा सकता है कि योग संदेश ने आग में घी का कार्य किया।

(*iii*) गोपियाँ ऐसे व्यक्ति को गुहार लगाना चाहती हैं जो उन्हें श्रीकृष्ण के बारे में बताए, उनका समाचार सुनाए तथा गोपियों के संदेश को, उनकी वियोग-जनित पीड़ा का संदेश श्रीकृष्ण तक पहुँचाए। गोपियाँ ऐसा इसलिए करना चाहती हैं क्योंकि वे श्रीकृष्ण की विरहाग्नि में बुरी तरह से जल रही हैं। उनके धीरज धारण करने की सीमा अब समाप्त होती जा रही है। आखिर वे किस आधार पर तथा किसके सहारे जीवित रहेंगी। इसलिए वे गुहार लगाना चाहती हैं।

(ख) तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ,
आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढाँढ़स बँधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर।

(*i*) प्रथम पंक्ति में किसके गले का ज़िक्र है? उसका गला क्यों बैठने लगता है?

(*ii*) संगतकार की भूमिका कैसे महत्त्वपूर्ण हो जाती है?

(*iii*) संगतकार और मुख्य गायक के सम्बन्ध पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—(*i*) प्रथम पंक्ति में मुख्य गायक के गले का ज़िक्र किया गया है। मुख्य गायक के गले के बैठने का कारण है उसका तारसप्तक में बैठकर ज़ोर-ज़ोर से चीख-चीखकर आवाज़ निकालना। अधिक चीखने और चिल्लाने के कारण गले का बैठ जाना स्वाभाविक ही है।

(*ii*) ऐसे में संगतकार की भूमिका महत्त्वपूर्ण इसलिए हो जाती है कि वह अपने सहयोग से या पराक्रम से मुख्य गायक को सफल बनाता है तथा सफलता का श्रेय स्वयं न लेकर मुख्य गायक को दिलाता है। उदाहरण के लिए तार सप्तक में जब मुख्य गायक का गला बैठ जाता है, उस समय संगतकार का स्वर उसे ढाँढ़स बंधाता है। इस प्रकार संगतकार की भूमिका को महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है।

(*iii*) मुख्य गायक को बड़ा और संगतकार को छोटा दिखाया गया है। यहाँ इस सम्बन्ध को तीन रूपों में दिखाया गया है :

1. वह मुख्य गायक का छोटा भाई है।
2. वह मुख्य गायक का शिष्य है।
3. वह दूर से पैदल चलकर सीखने आने वाला रिश्तेदार है।

इसके अतिरिक्त संगतकार को ढाँढ़स वाले स्वर के कारण सहयोगी या सेवक की भूमिका निभाने वाले सहायक कलाकार के रूप में भी दर्शाया गया है।

11. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×3=9

(क) 'छाया मत छूना' कविता में 'छाया' शब्द किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है? कवि उसे छूने से क्यों मना करता है?

(ख) 'फ़सल' कविता में फ़सल उपजाने के लिए किन-किन तत्त्वों की आवश्यकता और उपयोगिता बतलाई गई है?

(ग) 'कन्यादान' कविता में माँ अपनी बेटी को कैसे सावधान करती है, और क्या सलाह देती है?

(घ) निराला जी ने बादल से बरसने के साथ ही गरजने के लिए क्यों कहा है? तर्क दीजिए।

उत्तर—(क) देखें प्रश्न 11 (घ), 2008 (Comptt. I Delhi). [पृष्ठ 156

(ख) देखें प्रश्न 11 (ग), 2009 (I Outside Delhi). [पृष्ठ 195

(ग) देखें प्रश्न 10 (क) (*i, ii, iii*), 2003 (Set I). [पृष्ठ 28

(घ) महाकवि निराला ने बरसने के साथ-साथ बादल को गरजने के लिए कहा है क्योंकि क्रांतिवीर बादल गरज और दहाड़ से समाज में क्रांति की चेतना भर देंगे। क्रांति से परिवर्तन आएगा तथा परिवर्तन से समाज का विकास होगा। प्राचीन

रूढ़ियां, शोषण तथा विषमता समाप्त होंगी और स्वस्थ्य परम्पराओं वाला स्वस्थ मानव-समाज प्रतिष्ठित हो सकेगा। क्रांति का स्वर कठोर होता है। बादल की गरज और दहाड़ उसी कठोरता का प्रतीक है। इसलिए कवि ने बादल को बरसने के साथ-साथ क्रांति की वर्षा करने को कहा है।

12. निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी *एक* के प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×5=5

(क) सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा।
सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा।
न त मारे जैहहिं सब राजा॥

(*i*) उक्त पंक्तियाँ किस भाषा में लिखी गई हैं?

(*ii*) उक्त पंक्तियों की रचना किस छंद में हुई है?

(*iii*) उपमा अलंकार किस पंक्ति में है?

(*iv*) 'सो बिलगाउ बिहाइ समाजा'—में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए।

(*v*) 'सहसबाहु सम सो रिपु मोरा' क्यों कहा गया है?

उत्तर—(*i*) उक्त पंक्तियाँ अवधी भाषा में लिखी गई हैं।

(*ii*) उक्त पंक्तियों की रचना चौपाई छंद में हुई है।

(*iii*) उपमा अलंकार—'सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।'

(*iv*) अनुप्रास अलंकार 'ब' की आवृत्ति।

(*v*) सहसबाहु ने परशुराम के पिता की हत्या की थी। परशुराम ने उसकी हत्या करके बदला लिया। भगवान शंकर परशुराम के गुरु थे। शिवजी का धनुष तोड़ने के कारण धनुष तोड़ने वाला उनकी नज़रों में अपराधी है। अत: परशुराम ने 'सहसबाहु सम सो रिपु मोरा' कहा है।

(ख) मधुप गुन-गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।
इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास
यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य-मलिन उपहास

(*i*) उक्त काव्य पंक्तियाँ किस भाषा में लिखी गई हैं?

(*ii*) 'मधुप' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और क्यों?

(*iii*) 'व्यंग्य-मलिन उपहास' का भाव क्या है?

(*iv*) 'कौन कहानी यह अपनी' में कौन-सा अलंकार है?

(*v*) 'नीलिमा' के लिए प्रयुक्त किसी एक विशेषण का सौंदर्य बताइए।

उत्तर—(*i*) उक्त पंक्तियाँ खड़ी बोली में लिखी गई हैं।

(*ii*) 'मधुप' शब्द मन के लिए प्रयुक्त हुआ है क्योंकि मन रूपी भौंरा ही गुनगुनाते हुए (चिंतन करते हुए) जीवन की कहानी कहता है।

(*iii*) व्यंग्य-मलिन उपहास का भाव यह है कि आत्मकथा लिखने वाले साहित्यकार (कवि अथवा लेखक) अपने ही जीवन पर व्यंग्य करते हैं तथा ज़िन्दगी की निन्दा करते हैं क्योंकि उनका मज़ाक पढ़कर सभी लोग हँसी उड़ाएंगे।

(*iv*) अनुप्रास अलंकार—'क' वर्ण की आवृत्ति।

(*v*) **'नीलिमा'** के दो विशेषण हैं—गंभीर और अनंत। यहाँ नीलिमा आकाश (नीले आकाश) का प्रतीक है। 'अनंत' आकाश का पर्याय है। 'गंभीर' शब्द व्यापकता का प्रतीक है। आकाश व्यापक, अंतहीन और नीला है। साहित्य के लिए प्रतीकात्मक प्रयोग आकाश आया है जिसका अर्थ है—साहित्यरूपी व्यापक आकाश में अनेक साहित्यकारों के जीवन का इतिहास (आत्मकथा) छिपा पड़ा है। इसे पढ़कर लोग उन पर, उनकी ज़िन्दगी पर व्यंग्य करते हैं, उनकी निंदा करते तथा उनका उपहास करते हैं।

13. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी *एक* पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2×3=6

(क) बेटे के क्रिया-कर्म में तूल नहीं किया; पतोहू से ही आग दिलाई उसकी। किंतु ज्यों ही श्राद्ध की अवधि पूरी हो गई, पतोहू के भाई को बुला कर उसके साथ कर दिया, यह आदेश देते हुए कि इसकी दूसरी शादी कर देना। इधर पतोहू रो-रोकर कहती—मैं चली जाऊँगी तो बुढ़ापे में कौन आपके लिए भोजन बनाएगा, बीमार पड़े, तो कौन एक चुल्लू पानी भी देगा? मैं पैर पड़ती हूँ, मुझे अपने चरणों से अलग नहीं कीजिए! लेकिन भगत का निर्णय अटल था।

(*i*) पतोहू को उसके भाई के साथ क्यों भेज दिया? *दो* कारण बताइए।

(*ii*) 'बुढ़ापे में कौन आपको भोजन-पानी देगा' इस वाक्य के आधार पर पतोहू के स्वभाव की *दो* विशेषताएँ लिखिए।

(*iii*) भगत के चरित्र की *दो* विशेषताएँ उक्त पंक्तियों के आधार पर लिखिए।

उत्तर—(*i*) **पतोहू को मायके भेजने के कारण :**

1. बाल गोबिन भगत चाहते थे कि पतोहू युवा अवस्था में ही वैधव्य का कष्ट न झेले। वह पुन: शादी करके दाम्पत्य-जीवन का सुख भोगे।

2. युवा अवस्था में मन की चंचलता को रोकना संभव नहीं है। कहीं आस-पास किसी से प्रेम हो गया तो बदनामी तथा सामाजिक मर्यादा के भंग होने का भय था।

3. भगतजी अपनी सेवा में पतोहू को रखकर उसके जीवन को परतंत्र नहीं बनाना चाहते थे। उसे भी स्वतंत्र और सुखमय जीवन बिताने का अवसर प्रदान करके मानवता का परिचय देना चाहते थे।

(*ii*) 1. बालगोबिन भगत की पतोहू परोपकारिणी नारी थी। वह अपने सुख के लिए भगतजी को दुखी नहीं करना चाहती थी।

2. वह आत्मसंतोषी नारी है, धैर्यशील है, त्यागमना है इसलिए आत्म सुख की चिन्ता न करके भगतजी की चिन्ता करती है।

(*iii*) 1. बालगोबिन भगत प्राचीन रूढ़ियों को नहीं मानते थे तभी तो पतोहू से पुत्र की चिता को आग दिलाई। उन्होंने स्वयं आग नहीं दी।

2. वे विधवा-विवाह के समर्थक थे। इसी आधार पर पतोहू के भाई को बुलाकर उसे विदा कर दिया।

3. भगतजी का संकल्प अटल था। वे अपना निर्णय नहीं बदलते थे।

(ख) शायद गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्त्वाकांक्षाएँ हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिये पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बन कर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थीं।

(*i*) 'सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना' से क्या अभिप्राय है?

(*ii*) आर्थिक विवशताओं में बच्चों को भागीदार बनाने में कौन-सी बातें आड़े आ रही थीं?

(*iii*) माँ के प्रति क्रोध के क्या कारण थे?

उत्तर—(*i*) *सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ने* से आशय है—नकारात्मक विचारों का बढ़ना जैसे विश्वास करने की जगह अविश्वास करना, अपने बच्चों को भी शक की नज़र से देखना, शांत मन की जगह क्रोध करना आदि सोच या विचार नकारात्मक कहलाते हैं। लेखिका के पिता की गिरती आर्थिक दशा के कारण ही उनमें यह बुराइयाँ तथा मानवीय दुर्बलताएँ बढ़ने लगी थीं।

(*ii*) आर्थिक विवशताओं में बच्चों को भागीदार बनाने में अनेक बातें आड़े आ रही थीं। जैसे पिता का विस्फारित अहंकार, बड़े बनने का मिथ्या प्रदर्शन आदि। इसके अतिरिक्त पिता का हठी स्वभाव तथा बच्चों से अनुशासनात्मक दूरी बनाए रखने की भावना आदि ऐसी ही बाते हैं जो लेखिका सहित भाई-बहनों को आर्थिक विवशताओं में भागीदार बनाने में बाधा बन रही थीं।

(*iii*) माता के प्रति पिता के क्रोध के कारण थे—उनकी नवाबी आदतें, अधूरी महत्त्वाकांक्षाएँ तथा हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर लेखिका की माँ को कँपाती रहती थीं। यही वे कमियाँ थीं जो उनके क्रोध का कारण बनती थीं।

14. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×3=9

(क) 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ के आधार पर बताइए कि 'फ़ादर कामिल बुल्के' मन से संन्यासी क्यों नहीं थे?

(ख) 'परम्परा के उन्हीं पक्षों को स्वीकार किया जाना चाहिए जो स्त्री-पुरुष समानता को बढ़ाते हों।' 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ के आधार पर इस कथन का विवेचन कीजिए।

(ग) 'संस्कृति' पाठ के आधार पर 'संस्कृत व्यक्ति' के लक्षणों का उल्लेख कीजिए।

(घ) 'नगर-पालिका थी तो कुछ-न-कुछ करती भी रहती थी' वाक्य में छिपे व्यंग्य को 'नेताजी का चश्मा' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—(क) देखें प्रश्न 13 अथवा (ग), 2009 (I Delhi). [पृष्ठ 183

(ख) लेखक **आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी** एक खुली सोचवाले लेखक थे। वे शिक्षाविद होने के साथ-साथ समाज सुधारक भी थे। वे चाहते थे कि समाज में नारी को भी वही स्थान मिलना चाहिए जो पुरुष को मिलता आया है। स्वतंत्रता के साथ समानता का अधिकार नारी को भी मिलना चाहिए। शिक्षा का अधिकार मौलिक अधिकारों में से एक है। इस आधार पर नारी को शिक्षा से वंचित नहीं रखना चाहिए। शिक्षा से ही व्यक्ति, परिवार तथा राष्ट्र का विकास होता है। आर्थिक प्रगति में नारी का योगदान अभीष्ट है।

(ग) देखें प्रश्न 14 (*iv*), 2003 (Set I). [पृष्ठ 31

(घ) 'नगर-पालिका थी तो कुछ-न-कुछ करती भी रहती

थी' पाठ में छिपे व्यंग्य द्वारा लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि नगरपालिका के अधिकारी, कर्मचारी नगरपालिका की आमदनी को कहीं न कहीं खर्च करते रहते हैं। सरकारी कार्य है। अत: पैसे के खर्च का कोई लेखा-जोखा नहीं रखा जाता, न ही कार्य का निरीक्षण करने का कष्ट किया जाता है। अपने शासन में अथवा कार्य-काल में बचा हुआ धन खर्च करके ही सम्बंधित अधिकारियों को चैन मिलता है। सरकारी कर्मचारियों की कार्यशैली तथा ढीलाई पर भी व्यंग्य किया गया है।

15. (क) 'बिस्मिल्ला खाँ' की उन *तीन* विशेषताओं को लिखिए जो आपको प्रभावित करती हैं। 3

(ख) नवाब साहब ने खीरा खाने के लिए जो तैयारी की उसका उल्लेख 'लखनवी अंदाज़' पाठ के आधार पर कीजिए। 2

उत्तर—(क) 'बिस्मिल्ला खाँ' की विशेषताएँ :

1. वे मिलीजुली संस्कृति के प्रतीक थे। हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति के मेलजोल का प्रयास करते थे।

2. वे अपने धर्म का पालन करते हुए हिन्दू धर्म, काशी-विश्वनाथ जी तथा बालाजी के प्रति श्रद्धा रखते थे।

3. वे 'सादा जीवन उच्च विचार' वाले थे। अभिमान संरहित थे।

(ख) नवाब साहब ने खीरे को साफ़ पानी से धोया फिर साफ़ तौलिए से पोंछा। इसके बाद जेब से चाकू निकालकर छिलके उतारे। इसके बाद खीरे की एक-एक फाँक करके करीने से तौलिए पर सजाते गए। फाँको के ऊपर नमक, मिर्च जीरे का पिसा हुआ चूर्ण बुरक दिया। इसके बाद एक-एक फाँक उठाकर सूँघकर रसास्वादन किया और फाँको को खिड़की से बाहर फेंकते गए।

16. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी *एक* प्रश्न का उत्तर लिखिए : 4

(क) 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के आधार पर लिखिए कि विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ और किस प्रकार से हो रहा है? इसे रोकने के उपाय सुझाइए।

(ख) 'जार्ज पंचम की नाक' पाठ में दिल्ली की काया पलटने की बात कही गई है। सोच कर लिखिए कि क्या और कैसे काया पलट हुई होगी?

उत्तर—(क) विज्ञान का दुरुपयोग मानव-संहार के लिए बनाए गए अस्त्र-शस्त्रों, प्रक्षेपास्त्रों, अणु बमों द्वारा हो रहा है। मछलियों को मारने के लिए भी बमों का प्रयोग किया जा रहा है। असंख्य मछलियाँ एक ही साथ मर जाती हैं।

विज्ञान का दुरुपयोग रोकने के लिए मानव-संहार के लिए बनाए जाने वाले अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण पर रोक लगानी चाहिए। अणुशक्ति के दुरुपयोग को रोक कर उसका विद्युत उत्पादन तथा चिकित्सा के क्षेत्रों में सदुपयोग किया जा सकता है।

(ख) दिल्ली की काया पलट इस प्रकार होने लगी कि सड़कों की मरम्मत की गई। सड़कों की सफ़ाई की गई। दोनों किनारों पर सफ़ेदी की लकीरें खींची गईं। रास्ते में आने वाले मकानों की मरम्मत की गई। मकानों पर पेंट किया गया। जगह-जगह पर स्वागत द्वार बनाए गए। तोरण मार्ग द्वारा महारानी एलिज़ाबेथ तथा उनके साथ आने वाले अतिथियों के स्वागत की तैयारी जगह-जगह की जाने लगी। इस प्रकार दिल्ली सज-धज कर तैयार की गई।

17. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं *तीन* के उत्तर लिखिए : 2×3=6

(क) 'माता का आँचल' पाठ में माँ भोलानाथ को किस प्रकार कन्हैया बनाती है?

(ख) लेखक ने स्वयं को हिरोशिमा के विस्फोट का 'भोक्ता' कब और कैसे महसूस किया?

(ग) प्रकृति के उस अनंत और विराट रूप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति हुई? 'साना-साना हाथ जोड़ि...' पाठ के आधार पर लिखिए।

(घ) 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!' पाठ में सम्पादक ने यह क्यों कहा—'शर्मा द्वारा लिखी रिपोर्ट सच है, पर छप नहीं सकती'?

उत्तर—(क) माँ भोलानाथ को पकड़कर सरसों के दानों से बना उबटन लगाती, पूरे शरीर की मालिश करती, फिर कड़वे (सरसों का) तेल को चुल्लू में भर कर भोलानाथ के सिर पर लगाती थी। इसके बाद काला टीका लगाती थी। नए अथवा साफ़-सुथरे कपड़े पहनाती थी। सिर पर टोपी लगाती थी। इस प्रकार बालक भोलानाथ को कन्हैया बनाती थी।

(ख) देखें प्रश्न 17 (*iv*), 2007 (Set I). [पृष्ठ 101

(ग) देखें प्रश्न 16 (ख), 2008 (Comptt. II Delhi). [पृष्ठ 160

(घ) देखें प्रश्न 17 (*ii*), 2003 (Set I). [पृष्ठ 31

Hindi (Course A)—2009
Comptt.
Set II—Delhi

निर्धारित समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

निम्न प्रश्नों के अतिरिक्त शेष सभी प्रश्न Set I में पूछे गए हैं।

खण्ड 'ख'

3. आपके विद्यालय में वार्षिक उत्सव मनाया गया। पूरे कार्यक्रम का संचालन आपने किया और लोगों ने आपकी खूब प्रशंसा की। उत्सव और आपकी प्रसन्नता दोनों का उल्लेख करते हुए पिताजी को पत्र लिखिए। 5

उत्तर—

पूज्य पिताजी,

सादर चरण-स्पर्श

मैं यहाँ सकुशल हूँ तथा आशा करता हूँ कि आप भी कुशल पूर्वक होंगे। इधर विद्यालय का वार्षिकोत्सव था। उसे मनाने के लिए लगभग दो सप्ताह से हमलोग तैयारी में लगे थे। मैंने सारे उत्सव का कार्य-संचालन किया। दर्शकों ने बार-बार करतल ध्वनि से हमारा उत्साह बढ़ाया। हर सांस्कृतिक कार्य के बाद दर्शक वाह-वाह करते तथा करतल ध्वनि द्वारा हमारा उत्साह बढ़ाते गए।

वास्तव में उत्सव की सफलता हमारी प्रसन्नता का कारण बना। आपको यह जानकार प्रसन्नता होगी कि इस उत्सव ने मेरे अंदर आयोजन के लिए नया आत्म-विश्वास पैदा कर दिया है। ईश्वर की कृपा से हमें सफलता मिली तथा सभी प्राध्यापक जी, अध्यापकगण तथा छात्र प्रसन्न हैं। यहाँ सब शेष कुशल है। माँ को प्रणाम कहिएगा।

आपका पुत्र

रोहित

दसवीं ए

अथवा

आपके गाँव में प्राथमिक विद्यालय है। आगे पढ़ने वाले लड़के-लड़कियों को चार किलोमीटर पैदल जाना पड़ता है। अपनी कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए शिक्षा निदेशक को एक पत्र लिखिए जिसमें उच्चतर स्तर का विद्यालय खोलने का अनुरोध किया गया हो।

उत्तर—

रामनिवास

ग्राम-सेमरा

सीतापुर

सेवा में,

शिक्षा निदेशक महोदय,

लखनऊ (उ०प्र०)

विषय : उच्चतर स्तर का विद्यालय खोलने के सम्बंध में पत्र।

महोदय,

निवेदन है कि हमारे गाँव सेमरा में एक पुराना प्राथमिक विद्यालय है। यहाँ प्राइमरी स्तर तक शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा है। किन्तु पाँचवीं के बाद आगे की पढ़ाई के लिए हमारे यहाँ के सभी छात्रों को सीतापुर तक चार किलोमीटर पैदल जाना पड़ता है। वहाँ से छुट्टी के बाद भी चार किलोमीटर पैदल आना पड़ता है। इस प्रकार नित्य आठ किलोमीटर पैदल चलने में समय तथा श्रम दोनों की हानि होती है। इस पर घर आकर कुछ घर का काम कुछ पढ़ाई—छात्रों को दिनचर्या में पूरा समय नहीं मिल पाता है।

अत: आपसे निवेदन है कि हमारे गाँव में ही एक उच्चतर स्तर का विद्यालय खुलवाने का कष्ट करें जिससे हमारे गाँव के सभी लड़के-लड़कियाँ शिक्षा का लाभ प्राप्त कर सकें।

सधन्यवाद

भवदीय

रामनिवास

दिनांक : 28.08.09

खण्ड 'ग'

6. निर्देशानुसार वाच्य बदलिए :

(*i*) अनेक संस्थाओं ने बाढ़-पीड़ितों के लिए सहायता की अपील की। (कर्मवाच्य में) **1**

(*ii*) आइए चलें। (भाववाच्य में) **1**

(*iii*) बूढ़े आदमी से चला नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में) **1**

उत्तर—(*i*) अनेक संस्थाओं द्वारा बाढ़-पीड़ितों के लिए सहायता की अपील की गई।

(*ii*) आइए चला जाए।

(*iii*) बूढ़ा आदमी चल नहीं पाता।

7. निर्देशानुसार वाक्य बदलिए :

(*i*) मोहन के आते ही वह उठकर चल दिया। (संयुक्त वाक्य में) **1**

(*ii*) माता जी बाज़ार गईं और बच्चों के लिए खिलौने लाईं। (सरल वाक्य में) **1**

(*iii*) मैं देखना चाहती हूँ। उनके व्यक्तित्व की क्या-क्या विशेषताएँ हैं? (मिश्र वाक्य में) **1**

उत्तर—(*i*) मोहन आया और वह उठकर चल दिया।

(*ii*) माता जी बाज़ार जाकर बच्चों के लिए खिलौने लाईं।

(*iii*) मैं देखना चाहती हूँ कि उनके व्यक्तित्व की क्या-क्या विशेषताएँ हैं।

8. रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए :

(*i*) <u>वह</u> भी पास हो गया और सोहन भी। 1

(*ii*) <u>सीता ने</u> अपना पाठ याद कर लिया। 1

उत्तर—वह —पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, कर्त्ताकारक।
'हो गया' क्रिया का कर्त्ता।

सीता ने—व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्त्ताकारक।
'कर लिया' क्रिया का कर्त्ता।

9. (क) निम्नलिखित वाक्यों में अव्यय छाँटकर उसका भेद भी बताइए :

(*i*) चिड़िया पेड़ के ऊपर उड़ रही है। 1

(*ii*) वह फटाफट चला गया। 1

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया-पद छाँट कर कर्म के अनुसार क्रिया-भेद लिखिए :

(*i*) आकाश में पक्षी उड़ते हैं। 1

(*ii*) मेरे भाई ने अपनी पुस्तक सत्यकाम को दे दी। 1

उत्तर—(क) (*i*) ऊपर—स्थानवाचक क्रियाविशेषण।

(*ii*) फटाफट—रीतिवाचक क्रियाविशेषण।

(ख) (*i*) उड़ते हैं—अकर्मक क्रिया

(*ii*) दे दी—सकर्मक क्रिया।

खण्ड 'घ'

12. निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी *एक* के प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **1×5=5**

(क) लखन कहा हसि हमरे जाना।
सुनहु देव सब धनुष समाना॥
का छति लाभु जून धनु तोरें।
देखा राम नयन के भोरें॥

(*i*) उक्त पंक्तियाँ किस भाषा में लिखी गई हैं?

(*ii*) उक्त काव्यांश की रचना किस छंद में हुई है?

(*iii*) लक्ष्मण ने परशुराम को कैसे समझाया?

(*iv*) 'का छति लाभु जून धनु तोरें' कथन से क्या अभिप्राय है?

(*v*) छति तथा लखन शब्दों के तत्सम शब्द लिखिए।

उत्तर—(*i*) उक्त पंक्तियाँ अवधी भाषा में लिखी गई हैं।

(*ii*) उक्त वाक्यांश की रचना चौपाई छंद में हुई है।

(*iii*) लक्ष्मण ने परशुराम को समझाया कि हे देव! सभी धनुष एक समान हैं। धनुष के टूटने से क्या हानि है तथा न टूटने से क्या हानि है? इसे तो श्रीराम ने नया धनुष समझकर देखा मात्र था। अतः उनका कोई दोष नहीं है।

(*iv*) 'का छति लाभु जून धनु तोरें' कथन से अभिप्राय है कि धनुष के टूटने से परशुराम की कोई हानि नहीं थी और धनुष न टूटने से कोई लाभ नहीं था। परशुराम का भला इस धनुष से ही इतना लगाव या इतनी ममता क्यों है?

(*v*) छति—क्षति, लखन—लक्ष्मण

(ख) यह विडंबना! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं।
भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं।
उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की।
अरे खिल-खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।

(*i*) उक्त काव्यांश की भाषा कौन-सी है?

(*ii*) 'विडंबना' से क्या अभिप्राय है?

(*iii*) उज्ज्वल गाथा से कवि क्या कहना चाहता है?

(*iv*) 'रात' और 'बात' शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।

(*v*) चाँदनी रातों को कवि ने 'मधुर' क्यों कहा है?

उत्तर—(*i*) उक्त काव्यांश की भाषा खड़ी बोली है।

(*ii*) विडम्बना से अभिप्राय है—परिवर्तन या विरोधाभास या उपहास करना। कवि ज़िन्दगी का उपहास नहीं करना चाहता है। यही उसके कहने का भाव है।

(*iii*) उज्जवल गाथा से कवि यह कहना चाहता है कि अतीत की प्रसन्नता की कहानी आज नहीं कही जा सकती क्योंकि आज परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं हैं। उसके अच्छे दिन नहीं हैं। अतः आत्म-कथा द्वारा कवि अतीत की मधुर स्मृतियों को व्यक्त नहीं करना चाहता।

(*iv*) रात—रात्रि, बात—वार्ता

(*v*) चाँदनी रातों में उसे प्रिया का साहचर्य प्राप्त था। मिलन के वह क्षण अत्यन्त आनंदमय थे। कवि ने इसी कारण चाँदनी रातों को मधुर कहा है।

13. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी *एक* पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **2×3=6**

(क) बालगोबिन भगत की मौत उन्हीं के अनुरूप हुई। वह हर वर्ष गंगा स्नान करने जाते। स्नान पर उतनी आस्था नहीं

रखते जितना संत-समागम और लोक-दर्शन पर। पैदल ही जाते। करीब तीस कोस पर गंगा थी। साधु को संबल लेने का क्या हक? और गृहस्थ किसी से भिक्षा क्यों माँगे?

(*i*) संत-समागम और लोक-दर्शन से क्या तात्पर्य है?

(*ii*) किस बात से सिद्ध होता है 'भगत' साधु भी थे और गृहस्थी भी?

(*iii*) 'बालगोबिन भगत' की मौत उन्हीं के अनुरूप हुई'—कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—(*i*) संत समागम और लोक-दर्शन से तात्पर्य है—साधु-संतों के बीच रहकर उनका प्रवचन सुनना तथा तीर्थ-यात्रा करना, देव-दर्शन करना आदि। बालगोबिन भगत गंगा-स्नान से भी अधिक संत-समागम तथा लोक-दर्शन अर्थात् तीर्थाटन में आस्था रखते थे।

(*ii*) गद्यांश की अंतिम पंक्ति में बालगोबिन भगत द्वारा कही हुई बात से स्पष्ट होता है कि भगत जी साधु भी थे और गृहस्थी भी। यथा साधु को संबल लेने का क्या हक? इस आधार पर बालगोबिन साधु थे और किसी गृहस्थ से सहारा लेना न चाहते थे।

गृहस्थ किसी से भिक्षा क्यों माँगे कहकर वे यह सिद्ध करना चाहते थे कि स्वयं भगतजी गृहस्थ थे। अत: वे किसी से भीख नहीं माँग सकते क्योंकि गृहस्थ भीख देता है, लेता नहीं है।

(*iii*) 'बालगोबिन भगत' की मौत उन्हीं के अनुरूप हुई'—कथन का आशय यह है कि बालगोबिन भगत एक संत थे। वे गंगा-स्नान तथा साधु-दर्शन, सत्संग, तीर्थाटन में आस्था रखते थे। अंतिम बार वे गंगा-स्नान तथा संत-समागम से जब लौटे तब कमज़ोरी का अनुभव करने लगे थे। धीरे-धीरे वे शरीर से शिथिल और बीमार होकर क्षीणकाय होते चले गए। अंतत: एक दिन भोर के समय जब लोगों को संगीत का स्वर सुनाई नहीं पड़ा तो उन्होंने जाकर देखा कि भगतजी नहीं रहे केवल पंजर पड़ा था।

(ख) केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परम्परा और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का बिलकुल अहसास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाए बैठा रहता है! समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए ... स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे, हमें पूरी तरह उससे मुक्त तो नहीं कर सकता।

(*i*) 'बाहरी भिन्नता' से क्या अभिप्राय है?

(*ii*) 'आसन्न अतीत' से लेखिका का क्या आशय है और वह कैसे जड़ जमाए बैठा रहता है?

(*iii*) उन *दो* बातों का उल्लेख कीजिए जो हमें परम्परा से मुक्त नहीं कर सकतीं।

उत्तर—(*i*) 'बाहरी भिन्नता' से लेखिका मन्नू भंडारी का आशय यह है कि ऊपरी दिखावा करने से वास्तविक परम्परागत तथ्यों और पीढ़ियों को उपेक्षित समझना। अर्थात् जीवन की आंतरिक सच्चाई को ऊपरी दिखावे से छिपाने का प्रयास करना।

(*ii*) 'आसन्न अतीत' से लेखिका का आशय है—बीता हुआ निकट का समय। आसन्न अतीत के जड़ जमाने से आशय यह है कि वर्तमान युग में रहकर भी अतीत की परिस्थितियाँ अपना प्रभाव जमाए रहती हैं। उनसे मुक्त नहीं हुआ जा सकता। बाहरी भिन्नता अतीत के प्रभाव को कम या समाप्त नहीं कर सकती।

(*iii*) परम्परा से मुक्त न करने वाली बातें हैं :

1. समय का प्रवाह भले ही दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए।
2. स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे।

15. (क) 'लखनवी अंदाज़' पाठ का यह शीर्षक क्यों दिया गया है? 2

(ख) 'बिस्मिल्ला खाँ' की उन *तीन* विशेषताओं को लिखिए जो आपको प्रभावित करती हैं। 3

उत्तर—(क) 'लखनवी अंदाज़' पाठ का शीर्षक इसलिए दिया गया है कि लेखक ने सारी कहानी लखनऊ के नवाब की जीवन-शैली पर केंद्रित कर रखी है। नवाब साहब कहानी की वह धुरी हैं जिनके चारों ओर कथानक-रूपी पहिया चक्कर लगाता रहता है। लेखक ने आरम्भ से खीरे के रसास्वादन तक का वर्णन नवाब साहब के अनोखे अंदाज़ से जोड़े रखा है। अत: शीर्षक सार्थक एवं सटीक है।

(ख) देखें प्रश्न 15 (क), 2009 (Comptt. I Delhi). [पृष्ठ 211

Hindi (Course A)—2009
Comptt.
Set III—Delhi

निर्धारित समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

निम्न प्रश्नों के अतिरिक्त शेष सभी प्रश्न Set I तथा Set II में पूछे गए हैं।

खण्ड 'ख'

3. आपकी कॉलोनी में नागरिक सुविधाओं का अभाव है जिसके कारण लोगों को कठिनाइयों का सामना करना

पड़ता है। आप नगर-पालिका के सचिव को पत्र लिखें जिसमें नागरिक सुविधाएँ उपलब्ध कराने का अनुरोध हो। **5**

उत्तर—

रामकिशन

ब्रह्मपुरी कॉलोनी

अम्बाला

सेवा में,

सचिव महोदय

नगरपालिका

अम्बाला

विषय: नागरिक सुविधाओं के अभाव के सम्बन्ध में पत्र।

महोदय,

निवेदन है कि ब्रह्मपुरी कॉलोनी को बने कई वर्ष बीत गए हैं किन्तु न यहाँ पानी की सुविधा है, न सीवर की। यहाँ तक कि गलियाँ भी कच्ची हैं। बार-बार नगरपालिका में पत्र प्रेषित किया गया है किन्तु अभी तक कोई संतोषजनक कदम नहीं उठाया गया है। जन-सुविधा के इस अतीव अभाव में कॉलोनी-वासियों को अत्यन्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

आपसे निवेदन है कि अविलम्ब जन-सुविधाएँ प्रदान कराने का कष्ट करें।

सधन्यवाद

भवदीय

रामफल

दिनांक : 15.08.09

अथवा

अपने साथी के साथ अभद्र व्यवहार करने के लिए खेद व्यक्त करते हुए उसे एक पत्र लिखिए।

उत्तर—

परीक्षा भवन

दिनांक 02.08.09

प्रिय मित्र प्रशांत,

सप्रेम नमस्ते।

घर आने के बाद मैंने अनुभव किया कि भावावेश में आने के कारण मैंने तुम्हारे साथ अभद्र शब्दों का प्रयोग किया। वास्तव में इसे मेरे अभद्र व्यवहार का परिणाम कहा जा सकता है। तुमने प्रतिक्रिया के रूप में कुछ भी नहीं कहा, यह तुम्हारी महानता है। वास्तव में तुम्हारे लिए यथा नाम तथा गुण वाली कहावत चरितार्थ होती है।

आशा है कि मेरे अभद्र व्यवहार के लिए माफ करोगे। मैं अपनी भूल के लिए खेद प्रकट करता हूँ। भविष्य में हम दोनों की मित्रता कायम रहेगी, मैं ऐसा विश्वास दिलाता हूँ। शेष कुशल है। चाचा जी और चाची जी को प्रणाम!

तुम्हारा मित्र

राकेश

खण्ड 'ग'

5. (क) निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया-पद छाँट कर कर्म के अनुसार क्रिया-भेद लिखिए :

(*i*) बच्चा दूध पीता-पीता सो गया। **1**

(*ii*) रामू ने अभी-अभी लिखा है। **1**

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में अव्यय छाँटकर उसका भेद भी बताइए :

(*i*) मेरे ऑफिस के चारों ओर फूल हैं। **1**

(*ii*) वह सहसा मुड़ा और भाग गया। **1**

उत्तर—(क) (*i*) सो गया—सकर्मक क्रिया

(*ii*) लिखा है—अकर्मक क्रिया।

(ख) (*i*) चारों ओर—क्रियाविशेषण, स्थानवाचक

(*ii*) सहसा—क्रियाविशेषण, रीतिवाचक

6. रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए :

(*i*) तेजस ने भोजन कर लिया है। **1**

(*ii*) श्रेष्ठा अभी नौवीं कक्षा में है। **1**

उत्तर—(*i*) **तेजस** — व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक। 'कर लिया' क्रिया का कर्ता।

(*ii*) **नौवीं** — निश्चित संख्यावाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन। 'कक्षा' विशेष्य का विशेषण।

7. निर्देशानुसार वाक्य बदलिए : **1+1+1=3**

(*i*) कल मुझे दिल्ली जाना है और फिर कलकत्ता। (सरल वाक्य में)

(*ii*) भीख माँगने वाला कहाँ चला गया? (मिश्र वाक्य में)

(*iii*) वह पढ़ कर बाहर चला गया। (संयुक्त वाक्य में)

उत्तर—(*i*) कल मुझे दिल्ली आने के बाद कलकत्ता जाना है।

(*ii*) जो व्यक्ति भीख माँग रहा था वह कहाँ चला गया?

(*iii*) उसने पढ़ा और बाहर चला गया।

8. निर्देशानुसार वाच्य बदलिए :

(*i*) वह नदी पार नहीं कर सकता। (कर्मवाच्य में) **1**

(*ii*) उसके द्वारा सभी प्रश्न हल कर लिए गए। (कर्तृवाच्य में) 1

(*iii*) वह बैठ सकता है। (भाववाच्य में) 1

उत्तर—(*i*) उसके द्वारा नदी पार नहीं की जा सकती।

(*ii*) उसने सभी प्रश्न हल कर लिए।

(*iii*) उसके द्वारा बैठा जा सकता है।

खण्ड 'घ'

12. निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी *एक* के प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×5=5

(क) कौसिक सुनहु मंद येहु बालकु।
कुटिलु कालबस निज कुल घालकु।
भानुबंस राकेस कलंकू।
निपट निरंकुसु अबुधु असंकू।
कालकवलु होइहि छन माहीं।
कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं॥

(*i*) प्रस्तुत पंक्तियाँ किस भाषा में लिखी गई हैं?

(*ii*) प्रस्तुत पंक्तियों में छंद कौन-सा है?

(*iii*) अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण छाँटिए।

(*iv*) 'भानुबंस राकेस कलंकू' में कौन-सा अलंकार है?

(*v*) परशुराम लक्ष्मण को 'निज कुल घालकु' क्यों कहते हैं?

उत्तर—(*i*) प्रस्तुत पंक्तियाँ अवधी भाषा में लिखी गई हैं।

(*ii*) प्रस्तुत पंक्तियों में चौपाई छंद का प्रयोग किया गया है।

(*iii*) अनुप्रास अलंकार
1. कुटिलु कालबस 2. निपट निरंकुसु

(*iv*) रूपक अलंकार

(*v*) परशुराम यह मानते हैं कि लक्ष्मण अपने परिवार का नाश कराने वाला है क्योंकि लक्ष्मण की कटुवाणी का प्रभाव परशुराम पर ऐसा पड़ेगा कि वे लक्ष्मण सहित उसके समस्त परिवार को मौत के घाट उतार देंगे।

(ख) जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।
अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।
उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।
सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की?

(*i*) उक्त काव्यांश किस भाषा में लिखा गया है?

(*ii*) उक्त पंक्तियों में 'सीवन को उधेड़ने से' क्या तात्पर्य है?

(*iii*) 'उषा' के लिए प्रयुक्त 'अनुरागिनी' विशेषण का सौंदर्य बताइए।

(*iv*) उक्त काव्यांश में से मानवीकरण अलंकार का उदाहरण छाँटकर लिखिए।

(*v*) प्रेयसी की स्मृति को कवि ने 'पाथेय' क्यों कहा है?

उत्तर—(*i*) उक्त काव्यांश खड़ी बोली में लिखा गया है।

(*ii*) सीवन को उधेड़ने से तात्पर्य है—कवि की आंतरिक ज़िन्दगी में झाँकना। अर्थात् कवि के व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप करना।

(*iii*) अनुरागिनी का अर्थ है—प्रेम करने वाली। उषा अपनी लालिमा से अपना अनुराग अथवा प्रेम बाँटती है। लाल रंग प्रेम का प्रतीक होता है। सुख के कपोलों की लालिमा उषा के लिए सुहाग का चिह्न है, सौभाग्य का सूचक है।

(*iv*) 1. उषा का मानवीकरण किया गया है।
2. सुख का भी मानवीकरण किया गया है।

(*v*) प्रेयसी की स्मृति को कवि ने पाथेय कहा है क्योंकि वह उसके जीवनरूपी मार्ग का सम्बल है। जैसे कोई थका-हारा पथिक मार्ग का सम्बल प्राप्त कर लेता है तो आगे बढ़ने का साहस हो जाता है, उसी प्रकार कवि को अपने जीवन-मार्ग में आगे बढ़ने में प्रेयसी की स्मृति सहारा बन जाती है। कवि आशावादी बनकर जीवन बिताने की प्रेरणा प्राप्त करता है।

14. (क) नवाब साहब ने खीरा काटा, उस पर नमक-मिर्च बुरका दिया और खिड़की से बाहर फेंक दिया। आपके विचार से नवाब के इस व्यवहार का क्या कारण हो सकता है? 2

(ख) 'बिस्मिल्ला खाँ' की उन तीन विशेषताओं को लिखिए जो आपको प्रभावित करती हैं। 2

उत्तर—(क) देखें प्रश्न 14 (*iii*), 2004 (Set I). [पृष्ठ 49

(ख) देखें प्रश्न 15 (क), 2009 (Comptt. I Delhi). [पृष्ठ 211

15. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी *एक* पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2×3=6

(क) कार्तिक आया नहीं कि बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ शुरू हुईं, जो फागुन तक चला करतीं। इन दिनों वह सवेरे ही उठते। न जाने किस वक्त जग कर वह नदी स्नान को जाते—गाँव से दो मील दूर! वहाँ से नहा-धोकर लौटते और गाँव के बाहर ही पोखरे के ऊँचे भिंडे पर अपनी खँजड़ी लेकर जा बैठते और अपने गाने टेरने लगते। मैं शुरू से ही देर तक सोने वाला हूँ, किन्तु एक दिन, माघ की उस दाँत किटकिटाने वाली भोर में भी, उनका संगीत मुझे पोखरे पर ले गया था।

(*i*) बालगोबिन के कौन-से कामों से पता चलता है कि वे भगत थे?

(*ii*) लेखक किन परिस्थितियों में और क्यों पोखर पर चला जाता था?

(*iii*) कार्तिक महीने में बालगोबिन भगत की गतिविधियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—(*i*) कार्तिक मास के प्रारम्भ से ही बालगोबिन की प्रभातियाँ शुरू होतीं जो फाल्गुन तक चलतीं। इन दिनों वे सवेरे उठते, नदी स्नान करते, नित्य क्रिया से निवृत्त होकर गाँव के बाहर वाले पोखरे के ऊँचे भिंड पर बैठकर अपनी खंजड़ी बजाकर कबीर के पद गाते रहते थे। इससे पता चलता है कि वे भगत थे।

(*ii*) लेखक बालगोबिन भगत का संगीत सुनने के लिए ही जाड़े की भोर में दाँत किटकिटा देने वाली सर्दी में पोखर पर चला जाता था।

(*iii*) कार्तिक महीने में बालगोबिन भगत भोर में ही नहा-धोकर गाँव के बाहर पोखरे की मेंड पर बैठकर प्रभाती के गीत गाते थे। वे कबीर के पदों का सस्वर गायन करते थे। इस प्रकार धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कार्तिक महीने में अपनी धार्मिक गतिविधियों का परिचय बालगोबिन भगत देते थे।

(ख) पर पिताजी! कितनी तरह के अन्तर्विरोधों के बीच जीते थे वे। एक ओर 'विशिष्ट' बनने और बनाने की प्रबल लालसा तो दूसरी ओर अपनी सामाजिक छबि के प्रति भी उतनी ही सजगता। पर क्या यह संभव है? क्या पिताजी को इस बात का बिलकुल भी अहसास नहीं था कि इन दोनों का तो रास्ता ही टकराहट का है?

(*i*) पिताजी किन अंतर्विरोधों के बीच जी रहे थे?

(*ii*) विशिष्ट बनने और बनाने की लालसा से क्या तात्पर्य है?

(*iii*) सामाजिक छबि और विशिष्ट व्यक्ति बनने का मार्ग टकराहट का कैसे है?

उत्तर—(*i*) लेखिका के पिता एक ओर तो विशिष्ट बनकर तथा बनाकर जीने की लालसा रखते थे किन्तु दूसरी तरफ अपनी सामाजिक छवि की ओर भी उतनी ही सजगता रखते थे। इस प्रकार वे अंतर्विरोधों में जीते थे।

(*ii*) विशिष्ट बनने और बनाने की लालसा से तात्पर्य है—लेखिका के पिता ऐसे महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति थे कि वह चाहते थे कि उनकी अपनी अलग पहचान हो, समाज में नाम हो, यश हो, वर्चस्व हो। लोग उन्हें अलग ही नज़र से देखें। यही बात वे दूसरों के लिए भी सोचते थे।

(*iii*) सामाजिक छवि और विशिष्ट व्यक्ति बनने का मार्ग टकराहट का है क्योंकि जो व्यक्ति विशिष्ट बनना चाहेगा वह आत्म केंद्रित जीवन बिताएगा। वह समाज-सेवा में समय नहीं लगा सकता। इसी प्रकार सामाजिक कार्य अथवा समाज-सेवा करने वाले लोग अपने विकास के लिए कुछ नहीं कर पाते।

Hindi (Course A)—2009
Comptt.
Set I—Outside Delhi

निर्धारित समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

निर्देश :

*(i) इस प्रश्न-पत्र के **चार** खण्ड हैं—'क', 'ख', 'ग' और 'घ'।*

*(ii) चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।*

(iii) यथासंभव प्रश्नों के उपभागों के उत्तर क्रमशः दीजिए।

खण्ड 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और इसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।' बिना विचारे कार्य करने वाला जीवन-भर नौ-नौ आँसू रोया करता है। अतः कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व भली प्रकार से सोच-समझ कर निर्णय लेना चाहिए। जिस प्रकार मुँह से निकली बात, कमान से छूटा तीर वापिस नहीं आते; उसी प्रकार बीता हुआ समय कभी लौट कर नहीं आता। अतः उचित समय पर उचित निर्णय करना ही मानव का परम कर्तव्य है। विचारपूर्वक आगे बढ़ना ही सफलता का मूल मंत्र है। ग़लती करके पश्चात्ताप करना तो एक ग़लती के ऊपर दूसरी ग़लती करना है। जो बात हो चुकी उस पर चिंता करना, खेद करना, पश्चात्ताप करना व्यर्थ है; क्योंकि इससे कोई लाभ है ही नहीं। यदि पृथ्वीराज मोहम्मद गौरी के विषैले दाँतों को पहली बार हराते ही तोड़ देता, तो भारत का इतिहास कुछ और ही होता। कैकेयी के अविवेकपूर्ण निर्णय से न केवल उसे वैध्व्य ही झेलना पड़ा बल्कि वह सामाजिक निंदा का शिकार भी बनी। उसने पश्चात्ताप-स्वरूप राम को वापस लाने का प्रयास किया किन्तु सब व्यर्थ। रावण जैसे पराक्रमी शिवभक्त राजा ने अविवेक के कारण सीता-हरण कर लिया और उसकी यही भूल उसके लिए ही नहीं, बल्कि उसके समस्त परिवार के लिए विनाश का कारण बनी। निष्कर्ष-स्वरूप कहा जा सकता है कि बिना सोचे, विचार किए कार्य नहीं करना चाहिए क्योंकि उनका परिणाम अमंगलकारी होता है।

(*i*) 'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत' का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

(*ii*) 'पश्चात्ताप' को दूसरी ग़लती क्यों कहा गया है? 2

(*iii*) कैकेयी का अविवेकपूर्ण निर्णय क्या था? उसका क्या परिणाम निकला? 2

(*iv*) बीता समय वापस नहीं लौटता—यह बताने के लिए कौन-से उदाहरण दिए गए हैं? 2

(*v*) 'अमंगल' शब्द का विलोम शब्द लिखिए। 1

(*vi*) 'अविवेक' शब्द में से उपसर्ग छाँटिए। 1

(*vii*) 'परम कर्तव्य' में समास का नाम लिखिए। 1

(*viii*) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर—(*i*) 'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत' यह एक लोकोक्ति है। इसका आशय यह है कि समय बीत जाने पर पछताने से कोई लाभ नहीं होता। समय रहते ही ध्यान देना चाहिए।

(*ii*) पश्चाताप को दूसरी गलती इसलिए कहा गया है क्योंकि पश्चाताप करने से कोई लाभ नहीं होता; बल्कि भविष्य का रास्ता भी नहीं दिखाई देता। चिन्ता करने से, पछताने से बुद्धि कुंठित हो जाती है। इससे निराशा उत्पन्न होती है। अत: जो बीत गई सो बात गई, यही सोचकर आगे की सुधि लेनी चाहिए।

(*iii*) कैकेयी का अविवेकपूर्ण निर्णय था—श्रीराम को चौदह वर्ष के लिए बनवास भेजना तथा भरत के लिए राजगद्दी की माँग करना। कैकेयी ने श्रीराम के लिए सौतेली माँ होने का परिचय दिया और माता की उदारता, दयालुता का त्याग किया।

कैकेयी के अविवेकपूर्ण निर्णय का यह परिणाम निकला कि वह विधवा बनी और लोक-निन्दा का कारण भी बनी। बाद में वह पश्चाताप करती हुई श्रीराम को वापस लाने गई जिसमें उसे सफलता नहीं मिली। उसे जीवन भर कलंकित रहना पड़ा।

(*iv*) बीता समय वापस नहीं लौटता—यह बताने के लिए गद्यांश में निम्नलिखित उदाहरण दिए गए हैं—

1. मुँह से निकली हुई बात वापस नहीं आती।
2. कमान से छूटा तीर वापस नहीं आता।

(*v*) 'अमंगल' शब्द का विलोम शब्द है— '*मंगल*'

(*vi*) 'अविवेक' शब्द में 'अ' उपसर्ग है। मूल शब्द 'विवेक' है।

(*vii*) 'परम कर्तव्य' में *कर्मधारय* समास है।

(*viii*) उपयुक्त शीर्षक—

सफलता का आधार : समय की पहचान।

2. नीचे दिए काव्यांशों को पढ़िए और किसी *एक* काव्यांश के प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी।
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न 'आप' के लिए।
यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप-आप ही चरे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।
उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती;
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्मभाव जो असीम विश्व में भरे—
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।
क्षुधार्त रन्तिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस-दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीरचर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

(*i*) कवि ने किस प्रकार की मृत्यु को श्रेष्ठ बताया है; और कैसे मरण को मरण नहीं माना है? 2

(*ii*) किस उदारता का उल्लेख हुआ है और कौन उसकी गाथा गाता है? 2

(*iii*) किन्हीं *दो* दानवीरों के महान् दान के बारे में बताइए। 2

(*iv*) आशय स्पष्ट कीजिए—

'यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप-आप ही चरे।' 2

उत्तर—(*i*) कवि ने उस मृत्यु को श्रेष्ठ बताया है जो परोपकार करते हुए प्राप्त हो। ऐसा व्यक्ति मर कर भी नहीं मरता। वह यश रूपी शरीर में जीवित रहता है। जो स्वार्थ में नहीं मरता वही अमर होता है। ऐसे मरण को कवि ने मरण नहीं माना है।

(*ii*) सच्चा मानव उदार होता है। वह मनुष्यता को दिशा प्रदान करता है। वह मानव मात्र के लिए जीता और मरता है। उसकी उदारता की कथा ज्ञान की देवी सरस्वती बखानती है।

(*iii*) कोई **दो** उदाहरण अपेक्षित हैं :

1. **रंतिदेव** ने अपने हाथ में आई भोजन की थाली भूखे को दान में दे दी और स्वयं भूखे रह गए।

2. **दधीचि** ने अपनी हड्डियां दान में दे दीं। जिससे इंद्र ने वज्र बनाकर वृत्रासुर नामक राक्षस का वध किया।

3. **राजा** उशीनर ने शरण में आए कबूतर की रक्षा के लिए शिकारी को अपना मांस दान में दे दिया।

4. **कर्ण** ने इंद्र को अपने शरीर का चर्म (कवच-कुंडल) दान में दे दिया था।

(*iv*) 'यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप-आप ही चरे।' पंक्ति का आशय यह है कि पशु अज्ञानी होता है। वह अज्ञानता वश स्वार्थ में लीन रहता है। वह अपने चरने-खाने तक की सोच या चिन्तन रखता है। यह पशुओं की प्रवृत्ति (आदत) मानव को शोभा नहीं देती। मानव ज्ञान, बुद्धि तथा विवेक का स्वामी है। अत: उसे स्वार्थ से ऊपर उठकर औरों के लिए या परोपकार के लिए जीवन जीना चाहिए।

अथवा

आज सवेरे
जब वसंत आया उपवन में चुपके-चुपके
कानों-ही-कानों मैंने उससे पूछा—
मित्र! पा गए तुम तो अपने यौवन का उल्लास दुबारा
गमक उठे फिर प्राण तुम्हारे
फूलों-सा मन फिर मुस्काया
पर साथी!
क्या दोगे मुझको?
मेरा यौवन मुझे दुबारा मिल न सकेगा?
सरसों की उंगलियाँ हिलाकर संकेतों में वह यूँ बोला—
मेरे भाई!
व्यर्थ प्रकृति के नियमों की यों दो न दुहाई;
होड़ न बाँधो तुम यों मुझसे।
जब मेरे जीवन का पहला पहर झुलसता था लपटों में
तुम बैठे थे बंद उशीर-पटों से घिरकर
जब मैं वर्षा की बाढ़ों में डूब-डूब कर उतराया था
तुम हँसते थे वाटर-प्रूफ़ कवच को ओढ़े
और शीत के पाले में जब गल कर मेरी देह जम गई
तब बिजली के हीटर से तुम सेंक रहे थे अपना तन-मन।
जिसने झेला नहीं, खेल क्या उसने खेला?
जो कष्टों से भागा-दूर हो गया सहज जीवन के क्रम से
उसको दे क्या दान प्रकृति की यह गतिमयता, यह नव बेला
पीड़ा के माथे पर ही आनंद-तिलक चढ़ता आया है।
मुझे देखकर आज तुम्हारा मन यदि सचमुच ललचाया है
तो कृत्रिम दीवारें तोड़ो
बाहर जाओ,
खुलो, तपो, भीगो, गल जाओ।
आँधी तूफानों को सिर लेना सीखो।
जीवन का हर दर्द सहेजो/स्वीकारो हर चोट समय की।

(*i*) वसंत ने क्या झेला? तब उसका साथी क्या कर रहा था? 2

(*ii*) ''खुलो, तपो, भीगो, गल जाओ'' शब्द किन मौसमों का संकेत कर रहे हैं? 2

(*iii*) ''पीड़ा के माथे पर ही आनंद-तिलक चढ़ता आया है'' का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

(*iv*) 'होड़ न बाँधो तुम यों मुझसे'—कहकर वसंत क्या समझाना चाहता है?

उत्तर—(*i*) वसंत जब गर्म हवा की लपटों को झेल रहा था तब उसका साथी बंद उशीर पटों में घिरकर गर्मी से बचाव कर रहा था। वसंत जब बरसात में डूबकर उतराया करता था तब उसका साथी वाटरप्रूफ कवच को ओढ़े रहता था। वसंत जब सर्दी में गल रहा था तो साथी हीटर से अपना तन-मन सेंक रहा था। इस प्रकार वह प्रकृति की मार सहने की जगह आत्मरक्षा के उपाय ढूँढ रहा था।

(*ii*) खुलना वसंत ऋतु का तपना गर्मी का, भीगना बरसात का तथा गल जाना सर्दी के मौसम का संकेत देता है। इसके द्वारा कवि कहना चाहता है कि मनुष्य को प्रकृति से लगाव रखना चाहिए। उससे दूर नहीं भागना चाहिए।

(*iii*) ''*पीड़ा के माथे पर ही आनंद-तिलक चढ़ता आया है*'' पंक्ति का आशय यह है कि जो व्यक्ति अपने जीवन में संघर्ष करता है, पीड़ा या कष्ट सहता है, वही सफल होता है, उसे ही जीवन की उपलब्धियों का आनंद या लाभ प्राप्त होता है। सफलता का टीका आनन्द तिलक बनकर उस व्यक्ति के माथे पर चमकता है। अत: संघर्ष से दूर नहीं भागना चाहिए।

(*iv*) '*होड़ न बाँधो तुम यों मुझसे*'—कहकर वसंत यह समझाना चाहता है कि मनुष्य प्रकृति के कष्टों से दूर भाग कर अपने यौवन को दुबारा प्राप्त नहीं कर सकता। व्यक्ति यदि चिर यौवन बनाए रखना चाहता हो तो उसे सर्दी, गर्मी, बरसात की मार सहनी पड़ेगी। प्रकृति के हर कष्ट को सहर्ष स्वीकार करके ही चिर यौवन को कायम रखा जा सकता है।

खण्ड 'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी *एक* विषय पर निबन्ध लिखिए : 10

(क) बढ़ती जनसंख्या समस्या बन गई है। सारे संसाधन कम पड़ते जा रहे हैं। सरकारी प्रयास भी कारगर नहीं हैं। क्या हो इसका समाधान?

(ख) 'साक्षरता' प्रगति के लिए अनिवार्य है। इसके बिना सब पंगु हैं। 'साक्षरता-अभियान' को सफल बनाने के लिए हम अपने स्तर पर क्या योगदान कर सकते हैं?

(ग) भारत ने ओलंपिक खेलों में अपना नाम दर्ज कराया है। खेलों की उपयोगिता, उपलब्ध सुविधाओं के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं? इस दिशा में क्या-कुछ किया जा सकता है?

उत्तर—(क) जनसंख्या वृद्धि की समस्या

किसी भी देश की जनसंख्या यदि उस देश के संसाधनों की तुलना में अधिक हो जाती है तो देश के ऊपर भार बन जाती है। जनसंख्या वृद्धि की समस्या से अनेक समस्याओं का उदय होना स्वाभाविक बन जाता है। जब जनसंख्या निरंतर बढ़ती जाती है तो जीवन की आवश्यकतम आवश्यकताओं में भोजन, वस्त्र और मकान भी पूरे नहीं पड़ पाते हैं। खेत नहीं बढ़ते, खेती में कितनी उपज बढ़ाई जाए कि देश का पेट भर सके। यदि इसमें कमी रहती है तो दूसरे देशों से खाद्यान्न का आयात करना पड़ता है। इससे देश का पैसा दूसरे देशों में जाता है और अपना देश गरीब बन जाता है।

वस्त्र और मकान, बच्चों के लिए शिक्षा हेतु स्कूल, कॉलेज, मनोरंजन एवं खेल-सुविधाएँ प्रदान करने की समस्या पूरे देश को चिंतित कर देती है। अत: देश की बढ़ती जनसंख्या बहुत बड़ी समस्या बन जाती है। इसे नियंत्रण में रखना ही नागरिकों और राष्ट्र के लिए उचित है।

प्राकृतिक संसाधनों की बात जहाँ तक है, उसकी अपनी एक सीमा है। ये संसाधन उतनी मात्रा में एकाएक नहीं बढ़ाए जा सकते जितनी मात्रा में तथा जितनी तेज़ गति से जनसंख्या बढ़ती है। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे दैनिक जीवन पर पड़ रहा है। देश में लकड़ी की कमी, कोयले की कमी, पेट्रोल तथा डीज़ल की कमी, रसोई गैस की कमी का अनुभव हर व्यक्ति कर रहा है। इसके कारण मूल्य में प्रति वर्ष कुछ न कुछ वृद्धि होती ही जा रही है। बढ़ती हुई महंगाई से आम जनता बुरी तरह परेशान है। अत: बढ़ती जनसंख्या के लिए देश में पर्याप्त संसाधन भी कम पड़ जाते हैं।

सरकार की कोशिशें एक सीमा तक जनसंख्या-नियंत्रण हेतु अवश्य होती रही हैं किन्तु इसमें पूरी तरह सफलता नहीं मिल पाई है। सरकार द्वारा किए गए शिक्षा-शिविरों, प्रचारतंत्रों एवं जनसंख्या-वृद्धि को रोकने के उपायों को सराहणीय कदम कहा जा सकता है, पर अशिक्षित जनता पर इसका प्रभाव नहीं पड़ सका। अत: समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है।

जनसंख्या नियंत्रण के लिए आवश्यक है कि कानून को कड़ा बनाया जाए, किसी भी दशा में छूट नहीं दी जाए। यदि आर्थिक दंड या कर (टैक्स) का विधान हो तो उचित होगा। शिक्षा द्वारा जनता में जागरूकता लाई जानी चाहिए। व्यक्ति, समाज तथा सरकार के सामूहिक प्रयास से ही इस समस्या का समाधान हो सकता है।

(ख) साक्षरता : प्रगति का आधार

शिक्षा मानव-जीवन का आभूषण है। यह राष्ट्र की गरिमा का प्रतीक है। अशिक्षा मानव-जीवन, समाज तथा राष्ट्र के माथे पर लगा कलंक है जो विश्व-समुदाय के सामने सिर झुकाने को मज़बूर कर देता है। साक्षरता प्रगति का आधार है क्योंकि जो राष्ट्र शिक्षित नहीं हैं वे पिछड़े हैं, जो राष्ट्र शिक्षित हैं वे विकासशील तथा बाद में विकसित बन जाते हैं। शिक्षा से जागरूकता आती है। शिक्षित नागरिक अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों को समझ सकता है और उनके अनुसार जीवन में सक्रिय भूमिका निभा सकता है। एक आदर्श नागरिक बन सकता है। शिक्षा द्वारा नौकरी, व्यवसाय आदि कोई कार्य करके आर्थिक उन्नति कर सकता है। इससे व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा राष्ट्रीय आर्थिक विकास संभव हो सकेगा। राष्ट्रीय आय को बढ़ाने में भी शिक्षा सहायक होती है। अत: साक्षरता व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र की प्रगति का आधार है। इस बात से सभी सहमत होंगे कि शिक्षित समाज की अपनी अलग ही पहचान होती है। शिक्षा बिना सब पंगु हैं। हमारा जीवन गतिहीन और गतिहीनता के कारण दिशाहीन बन सकता है।

साक्षरता अभियान को सफल बनाने में सरकार ने कोई कसर नहीं छोड़ी है। हमारा दायित्व बनता है कि हम भी इस अभियान को सफल बनाने में अपना योगदान दें। इसके लिए हमें चाहिए कि अपने व्यस्त समय से थोड़ा समय निकालकर उन क्षेत्रों में जाएँ जहाँ के निवासी साक्षर नहीं हैं। प्रौढ़ शिक्षा के रूप में या साक्षरता अभियान के रूप में हम अशिक्षित समाज को शिक्षित अवश्य बना सकते हैं। प्रात: या शाम को या दोपहर को आराम करने के समय हम निरक्षरों को साक्षर बनाकर उन्हें जीवन ज्योति दे सकते हैं। उनके जीवन को दिशा देने वाला हमारा अभियान हमारा प्रयास अवश्य ही सफल हो सकता है। अत: आवश्यकता है सच्चे मन एवं संकल्प-शक्ति से जुटकर हर क्षेत्र की निरक्षर जनता को साक्षर बनाने की। साक्षरता से राष्ट्र विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में आ सकता है। यह सभी के लिए गर्व का विषय है।

(ग) **ओलंपिक खेल**

ओलंपिक खेल संसार में विश्व-बंधुत्त्व की भावना जगाने तथा खेल के माध्यम से राष्ट्रों में मैत्री-भाव पैदा करने के उद्‌देश्य से खेले जाते हैं। भारत ने भी ओलंपिक खेलों में अपना नाम दर्ज कराया है। इस प्रकार यह राष्ट्र राष्ट्रकुल में शामिल होकर अपनी पहचान बनाने वाला है।

खेलों की अपनी उपयोगिता होती है। इसके लिए आम के आम गुठली के दाम वाली कहावत चरितार्थ होती है क्योंकि एक ओर शरीर स्वस्थ होता है, स्वस्थ मन में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है तो दूसरी ओर यश मिलता है। अनेक तरह के पुरस्कार मिलते हैं, देश और दुनिया में नाम होता है। इससे व्यक्ति समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बनता है। ओलंपिक के स्तर पर पहचान बनाने वाले लोगों को सरकार तथा विभिन्न दलों से या संस्थाओं से प्रशस्ति-पत्र के साथ-साथ पुरस्कार भी मिलता है जिसमें अर्थलाभ भी शामिल है। हमारे देश में खेल-कूद के लिए उपलब्ध सुविधाएँ कम हैं। दूसरे देशों में सरकार खेलकूद पर जितना खर्च करती है, जो सुविधाएँ खिलाड़ियों को देती है, वह खर्च तथा वे सुविधाएँ हमारी सरकार प्रदान नहीं कर पाती है। इससे हमारा प्रदर्शन अन्य देशों के खिलाड़ियों की तुलना में उतना अच्छा नहीं रह पाता।

मेरे विचार से खेलों के विकास के लिए यह आवश्यक है कि गाँवों में स्टेडियम बनाए जाएँ, वहाँ प्रशिक्षक रखे जाएँ तथा गाँव के बच्चों में खेल प्रतिभा का विकास किया जाए। भारतवर्ष वस्तुत: गाँवों का देश है क्योंकि भारत की अधिकाँश जनसंख्या गाँवों में रहती है। ग्रामीण बच्चे प्रकृति में पलकर स्वस्थ रहते हैं। यदि उन्हें पर्याप्त खेल सुविधाएँ प्रदान की जाएं तो ओलंपिक में हमारा वर्चस्व कायम हो सकता है। प्राय: यह देखा जाता है कि शहरों में प्रतियोगिताएँ होती रहती हैं। उससे खेल-प्रतिभाओं का चयन आसानी से हो जाता है किन्तु गाँवों में प्रतियोगिताएं तथा प्रतिस्पर्धा नहीं होती। यदि गाँवों में भी खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता तो अवश्य ही बच्चों को प्रेरणा मिलती, खेल के प्रति उनका रुझान बढ़ता और वे ही खेल प्रतिभाएँ बनकर ओलंपिक में पदक विजेता बनते। हमारे देश में राजनीति हर जगह हावी रहती है। खेलों को राजनीति से दूर रखा जाना चाहिए और निष्पक्ष चयन प्रक्रिया को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

4. आपके विद्यालय का पुस्तकालय गत तीन वर्षों से बंद पड़ा है। उसे उपयोग में लाने की व्यवस्था करने के लिए विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। 5

उत्तर—

सेवा में
श्रीमान् प्रधानाचार्यजी
राजकीय विद्यालय
नरेला, दिल्ली

विषय : पुस्तकालय के उपयोग के सम्बन्ध में पत्र

महोदय

निवेदन है कि विद्यालय का पुस्तकालय विगत तीन वर्षों से बंद पड़ा है। वहाँ न कोई पुस्तक वितरण की सुविधा है न ही कोई कार्यकर्ता है जो पुस्तकों के वितरण का कार्य सुचारू रूप से कर सके। पुस्तकें ज्ञान-प्राप्ति का माध्यम होती हैं। हम विद्यार्थी ज्ञान-लाभ के लिए यहाँ उम्मीदें लेकर आते हैं किन्तु पुस्तकीय ज्ञान से वंचित रह जाते हैं।

अत: आप से प्रार्थना है कि विद्यालय का पुस्तकालय खुलवाकर उसे उपयोग में लाने की व्यवस्था करें जिससे हम छात्रों का भविष्य सुधर सके।

सधन्यवाद
आपका आज्ञाकारी शिष्य
क०ख०ग०
कक्षा - दसवीं, विभाग क
दिनाँक - 20-09-09

अथवा

आपके मित्र ने सड़क किनारे बैठे वृद्ध को उसके घर पहुँचाया। वृद्ध ने उसे इनाम देना चाहा लेकिन उसने मना कर दिया। उसके नि:स्वार्थ सेवा-भाव की प्रशंसा करते हुए उसे बधाई-पत्र लिखिए।

उत्तर—

परीक्षा भवन
दिनाँक 22 मार्च, 09

प्रिय मित्र
सप्रेम नमस्ते

यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि तुमने कल सड़क के किनारे बैठे हुए एक असहाय वृद्ध सज्जन को उनके घर पहुँचाया। तुम्हारे द्वारा यह जानने पर कि उनको आँखों से कम दिखाई देता है तथा शाम होने के कारण उनकी यह समस्या और भी बढ़ जाती है। तुमने उनकी सहायता करके मानवता का परिचय दिया है। इस कार्य के लिए मैं तुम्हें बधाई देता हूँ।

यह जानकर मुझे और भी खुशी हुई कि वृद्ध सज्जन के इनाम देने पर तुमने उन्हें मना कर दिया। वास्तव में सच्ची सेवा तो

नि:स्वार्थ सेवा ही हो सकती है। यदि इनाम लेकर या बदले में कुछ लेकर किसी की सहायता की जाए तो वह सेवा नहीं कही जा सकती। तुमने विवेक का परिचय दिया है। तुम्हारी इस नि:स्वार्थ सेवा के लिए मैं पुन: बधाई देता हूँ। तुम्हारा यह प्रयास मित्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा, ऐसा मैं विश्वास करता हूँ।

तुम्हारा मित्र
क०ख०ग०

खण्ड 'ग'

5. (क) निम्नलिखित वाक्यों में आए क्रिया-पदों को छाँटिए और कर्म के अनुसार उनके भेद लिखिए :

(*i*) चिड़िया उड़ती है। **1**

(*ii*) सोहन बुलाता है। **1**

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में अव्यय छाँटकर भेद बताइए :

(*i*) बगिया के दोनों ओर मकान हैं। **1**

(*ii*) बच्चा अचानक गिर पड़ा। **1**

उत्तर—(क) (*i*) उड़ती है—अकर्मक क्रिया

(*ii*) बुलाता है—सकर्मक क्रिया

(ख) (*i*) ओर—सम्बन्ध बोधक अव्यय

(*ii*) अचानक—कालवाचक क्रिया विशेषण

6. रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए :

(*i*) घर में <u>बच्चे</u> खेल रहे हैं। **1**

(*ii*) अभी-अभी <u>वह</u> कहाँ गया? **1**

उत्तर— (*i*) **बच्चे—** जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्त्ता कारक, 'खेल रहे हैं' क्रिया का कर्त्ता।

(*ii*) **वह—** पुरुष-वाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, कर्त्ता कारक 'गया' क्रिया का कर्त्ता।

7. निर्देशानुसार वाक्य बदलिए :

(*i*) फटी झोली वाला भिखारी चला गया। (मिश्र वाक्य में) **1**

(*ii*) सोए रहने वाले लोग असफल हो जाते हैं। (संयुक्त वाक्य में) **1**

(*iii*) श्रमिक ने खाना खाया और विश्राम करने लगा। (सरल वाक्य में) **1**

उत्तर—(*i*) जो भिखारी फटी झोली वाला था वह चला गया।

(*ii*) लोग सोते रहते हैं और असफल हो जाते हैं।

(*iii*) श्रमिक खाना खाकर विश्राम करने लगा।

8. निर्देशानुसार वाच्य बदलिए :

(*i*) सीता द्वारा काम किया जाता है। (कर्तृवाच्य में) **1**

(*ii*) मोहन खाना खाता है। (कर्मवाच्य में) **1**

(*iii*) दादा जी सीढ़ियाँ नहीं चढ़ पाते। (भाववाच्य में) **1**

उत्तर—(*i*) सीता काम करती है।

(*ii*) मोहन द्वारा खाना खाया जाता है।

(*iii*) दादा जी से सीढ़ियों पर नहीं चढ़ा जाता।

9. निम्नलिखित पंक्तियों में आए रेखांकित पदों के अलंकारों के नाम लिखिए :

(*i*) यों <u>जलद-यान</u> में विचर-विचर। **1**

(*ii*) <u>विमल वाणी ने वीणा ली</u>। **1**

(*iii*) <u>मृदुल मोम-सा घुल रे मृदु तन</u>। **1**

उत्तर—(*i*) जलद-यान—रूपक अलंकार

(*ii*) 'व' की आवृत्ति से—अनुप्रास अलंकार

(*iii*) मोम-सा—उपमा अलंकार।

खण्ड 'घ'

10. निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर किसी *एक* के प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×2=6

(क) तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान
मृतक में भी डाल देगी जान
धूलि-धूसर तुम्हारे ये गात...
छोड़ कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात
परस पाकर तुम्हारा ही प्राण,
पिघल कर जल बन गया होगा पाषाण
छू गया तुमसे कि झरने लगे शेफालिका के फूल
बाँस था कि बबूल?

(*i*) 'प्राण' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है? 'पाषाण' कैसे जल बन सकता है?

(*ii*) झोंपड़ी में जलजात खिलने का आशय स्पष्ट कीजिए।

(*iii*) 'दंतुरित मुस्कान' का क्या आशय है? कवि पर मुस्कान का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर—(*i*) 'प्राण' शब्द का प्रयोग साँस के लिए किया गया है। प्राण-वायु श्वास-वायु को कहा जाता है। *पंच प्राण: इति प्राण*। पाँच प्रकार की वायु (प्राण, व्यान, अपान, उदान, समान) से प्राणतत्व की रचना होती है।

बच्चे के प्राण अर्थात श्वास के स्पर्श से पाषाण जल बन सकता है। इसका अर्थ है—कठोर हृदय भी कोमल बन जाता है।

(*ii*) झोंपड़ी में जलजात (कमल) खिलने का आशय यह है कि जिस प्रकार खिले हुए कमल तालाब में अच्छे लगते हैं उसी प्रकार छोटे बच्चे के कारण घर, आँगन, द्वार अथवा झोंपड़ी की शोभा बढ़ जाती है। कमल की कोमलता, कमनीयता एवं सुन्दरता बच्चे के शरीर की कोमलता, स्वाभाविकता एवं प्राकृतिक सौन्दर्य में समान होती है। इसी आधार पर बच्चे के धूलि-धूसर गात को झोंपड़ी में खिल रहे जलजात कहा गया है।

(*iii*) 'दंतुरित मुस्कान' शब्द में दंतुरित शब्द मुस्कान का विशेषण है। दंतुरित मुस्कान का आशय है- जिस बच्चे के मुख में अभी दूध के दाँत निकल रहे हों, उस मुख की मुस्कान। ऐसी मुस्कान प्राकृतिक होती है, वात्सल्य जिससे साकार हो उठता है।

कवि के अनुसार बच्चे की दंतुरित मुस्कान का यह प्रभाव है कि वह बेजान शरीर में भी जान डाल देती है। घोर से घोर निराशावादी वातावरण में रहकर या जीवन के संघर्षों से जूझकर भी थका हारा कवि बच्चे की दंतुरित मुस्कान देखकर प्रफुल्लित हो उठता है। उसे ताज़गी तथा नव-स्फूर्ति का आभास हो उठता है।

(ख) हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखि सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी॥

(*i*) हरि को 'हारिल की लकड़ी' क्यों कहा गया है?

(*ii*) गोपियाँ जोग को 'व्याधि' क्यों मानती हैं?

(*iii*) कृष्ण के बिना गोपियों की दशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर—(*i*) सूरदास द्वारा रचित भ्रमरगीत से उद्धृत इस पद में गोपियों ने श्रीकृष्ण को हारिल की लकड़ी कहा है। इसमें गोपियाँ हारिल पक्षी का प्रतीक हैं और श्रीकृष्ण हारिल की लकड़ी के प्रतिक हैं।

जिस प्रकार हारिल पक्षी पंजे में लकड़ी हमेशा दबाए रहता है उसी प्रकार गोपियाँ अपने हृदय में श्रीकृष्ण को मन, वाणी और कर्म से दृढ़ता पूर्वक जकड़कर पकड़े रहती हैं। इसी आशा, विश्वास से वे जीवन बिता रही हैं। इसलिए हरि को हारिल की लकड़ी कहा गया है।

(*ii*) गोपियाँ श्रीकृष्ण से एकनिष्ठ प्रेम करती हैं। भक्ति और प्रेम के मार्ग में योग (जोग) की उपासना सबसे बड़ी बाधा होती है। व्याधि का अर्थ है—बीमारी। जिस प्रकार कोई स्वस्थ व्यक्ति बीमारी नहीं पालना चाहता है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण की प्रेम-दीवानी गोपियाँ योग-साधना नहीं चाहती हैं। इसलिए गोपियों ने योग को व्याधि कहकर उपेक्षित किया है। योग को महत्वहीन और भक्ति-प्रेम को महत्त्वपूर्ण बताया है।

(*iii*) गोपियाँ श्रीकृष्ण की प्रेम-दीवानी है। श्री कृष्ण के वियोग में वे तड़पती रहती हैं। यही कारण है कि वे जागते समय, सोते समय, स्वप्न में, दिन में तथा रात में कान्हा-कान्हा की रट लगाए रहती हैं। वे अपने हृदय में श्रीकृष्ण को बसाए रखती हैं किन्तु उनके दर्शन के अभाव में वह अत्यंत व्यथित हैं। योग का संदेश सुनकर उनके मन में व्याकुलता और बढ़ जाती है। उनके हृदय में वियोग की आग तेज़ प्रज्जवलित होने लगती हैं।

11. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×3=9

(क) परशुराम के साथ लक्ष्मण के स्थान पर यदि आपको संवाद करना पड़ता तो धनुष टूटने के बारे में आप क्या तर्क देते?

(ख) 'आत्मकथ्य' कविता में 'छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथा मैं आज कहूँ' कह कर कवि 'जीवन को छोटा और कथा को बड़ी' क्यों कह रहा है? स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'उत्साह' कविता में निराला जी ने 'विद्युत-छबि उर में' कवि, नवजीवन वाले!' कथन से क्या कहना चाहा है?

(घ) 'छाया मत छूना' कविता में कवि ने लिखा है—'क्या हुआ जो खिला फूल रस-वसंत जाने पर?' क्या आप इसे सही मानते हैं? **तीन-चार** पंक्तियों में युक्तियुक्त उत्तर दीजिए।

उत्तर—(क) परशुराम के साथ संवाद करने में धनुष टूटने के बारे में यही तर्क दिया जा सकता था कि धनुष तोड़ने के लिए उपस्थित वीरों को चुनौती दी गई थी, क्षत्रिय वीरों के स्वत्व को ललकारा गया था। धनुष तो इतना पुराना था कि तोड़ने की ज़रूरत नहीं पड़ी। श्रीराम ने उसे कोमलता से देखा मात्र था। वह धनुष तो छूते ही टूट गया। भला ऐसे पुराने, ज़ंग लगे धनुष को तोड़ने से क्या हानि है। अत: श्रीराम का कोई दोष नहीं है।

(ख) 'आत्मकथ्य' कविता में 'छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ' कहकर कवि **श्री जयशंकर प्रसाद** जी ने

'जीवन को छोटा और कथा को बड़ी' कहा है क्योंकि कवि ने यहाँ स्पष्ट कर दिया है कि उसका जीवन एक सामान्य व्यक्ति का जीवन है। ऐसी दशा में वह झूठा बड़प्पन दिखाना नहीं चाहता है। जीवन की लम्बी-चौड़ी कथा कहने का अनुकूल समय भी नहीं है। अत: उसने आत्मकथा लिखने या कहने में अपनी असमर्थता दिखाई। इसके द्वारा कवि यह भी स्पष्ट करना चाहता है कि उसकी आत्मकथा से व्यक्ति या समाज को कोई प्रेरणा नहीं मिलेगी। अत: मित्रगण आत्मकथा के लिए आग्रह न करें।

(ग) 'उत्साह' कविता महाप्राण **कवि निराला** द्वारा रचित प्रगतिवादी रचना है। इस आह्वान गीत में कवि ने बादलों को क्रांति का संवाहक अथवा अग्रदूत माना है। 'विद्युत-छबि' उर में कहने का आशय है कि बादल प्रकाश दिखाने वाला है। वह समाज को आशा और प्रेरणा का प्रकाश दिखाकर प्रगति के पथ पर अग्रसर कर दे। कवि यह कहकर बादल को समाज-सुधारक के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहता है। 'नवजीवन वाले' कहने का तात्पर्य है—नई चेतना जगाने वाले। कवि निराला ने बादल को नई चेतना जगाने वाले के रूप में प्रस्तुत किया है। इस आधार पर क्रांतिकारी चेतना द्वारा समाज की रूढ़ियों को ध्वस्त करके स्वस्थ परम्पराएँ कायम करने पर बल दिया है।

(घ) 'छाया मत छूना' कविता में कवि ने आशावादी स्वर मुखरित किया है और कहा है—'*क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर*'?

मेरे विचार से यह उचित नहीं है क्योंकि किसी भी वस्तु की उपादेयता तभी तक लाभप्रद होती है जब वह समय से प्राप्त हो। समय बीत जाने पर वस्तु की उपादेयता निरर्थक सिद्ध होती है। कहा भी गया है—

'का बरसा जब कृषि सुखाने'।

12. नीचे दिए काव्यांशों में से किसी *एक* पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×5=5

(क) पाँयनि नूपुर मंजु बजैं,
कटि किंकिनि कै धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लसैं पट पीत,
हिये हुलसै बनमाल सुहाई।
माथे किरीट बड़े दृग चंचल,
मंद हँसी मुखचंद जुन्हाई।
जै जग-मंदिर-दीपक सुंदर,
श्री ब्रज दूलह 'देव' सहाई॥

(*i*) काव्यांश की भाषा कौन-सी है?

(*ii*) उक्त पंक्तियाँ किस छंद में लिखी गई हैं?

(*iii*) 'कटि किंकिनि कै धुनि की मधुराई' में कौन-सा अलंकार है?

(*iv*) 'जग-मंदिर-दीपक' किसे कहा गया है?

(*v*) रूपक अलंकार का *एक* उदाहरण छाँटकर लिखिए।

उत्तर—(*i*) काव्यांश की भाषा ब्रज है।

(*ii*) सवैया छंद में लिखी गई हैं।

(*iii*) अनुप्रास अलंकार।

(*iv*) 'जग-मंदिर-दीपक' श्रीकृष्ण को कहा गया है।

(*v*) '*मंद हँसी मुखचंद जुन्हाई*'

अथवा

(ख) और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़
सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

(*i*) उक्त पंक्तियाँ किस भाषा में लिखी गई हैं?

(*ii*) काव्यांश की भाषा की एक विशेषता बताइए।

(*iii*) किसे विफलता नहीं, मनुष्यता समझा जाना चाहिए?

(*iv*) हिचक किसकी आवाज़ में है? क्यों?

(*v*) आशय स्पष्ट कीजिए—
स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश।

उत्तर—(*i*) खड़ी हिन्दी में लिखी गई हैं।

(*ii*) काव्यांश में उर्दू शब्दों का प्रयोग हुआ है, जैसे-आवाज़, साफ़।

(*iii*) संगतकार की आवाज़ में हिचक और स्वर को ऊँचा न उठाने की कोशिश को उसकी विफलता नहीं समझा जाना चाहिए, बल्कि उसे मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

(*iv*) हिचक संगतकार के स्वर में है क्योंकि वह जानबूझ कर परिश्रम करते हुए भी सफलता का श्रेय स्वयं न लेकर मुख्य गायक को दिलाना चाहता है।

(*v*) इसका आशय यह है कि संगतकार अपने स्वर को धीमा रखता है जिससे मुख्य गायक की तेज़ आवाज़ से उसकी पहचान बनी रहे और सफलता का श्रेय मुख्य गायक को ही प्राप्त हो सके।

13. नीचे दिए गए गद्यांशों में से किसी *एक* गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×2=6

(क) बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने

देश की ख़ातिर घर-गृहस्थी जवानी-ज़िंदगी सब कुछ होम देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौक़े ढूँढती है।

(*i*) हालदार को किस बात का अफ़सोस है और क्यों ?

(*ii*) ''अपने लिए बिकने के अवसर ढूँढती है'' का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

(*iii*) हालदार का अफ़सोस कैसे दूर हो सकता है? *तीन-चार* पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

उत्तर—(*i*) हालदार साहब को अफ़सोस है कि कैप्टन को पागल लंगड़ा कहकर पुकारने वाले लोग भी देश में है। ऐसी कौम देशभक्तों का मज़ाक उड़ाती है क्योंकि एक देशभक्त ही दूसरे देशभक्त का सम्मान कर सकता है। कैप्टन नेता जी का सम्मान करता था। अत: मूर्ति पर चश्मा लगाता रहता था।

(*ii*) ''*अपने लिए बिकने के अवसर ढूँढती है*'' का आशय है कि देशभक्तों का मज़ाक उड़ाने वाले देश में ऐसे लोग भी हैं जो आत्मसम्मान से रहित हैं। वे स्वाभिमान से रहित परतंत्रता (मानसिक गुलामी) का जीवन जीते हैं। ऐसे लोग, ऐसा समूह या समाज देश, जाति, धर्म के नाम पर कलंक हैं क्योंकि सबसे बड़ा धर्म राष्ट्र-धर्म है।

(*iii*) हालदार का अफसोस तब दूर हो सकता है जब देश का हर नागरिक देशभक्तों का सम्मान करने लगे। देशभक्तों का मज़ाक उड़ाने वालों को कानूनी अपराधी घोषित किया जाए। ऐसे लोगों का सामाजिक बहिष्कार भी किया जाना चाहिए। राष्ट्रधर्म सबसे बड़ा धर्म है। यदि राष्ट्र है तो हम हैं। राष्ट्रप्रेमी का सम्मान होना चाहिए क्योंकि राष्ट्रप्रेमी का सम्मान करने वाला भी राष्ट्रभक्त है।

(ख) इसी मंगल ध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ अस्सी बरस से सुर माँग रहे हैं। सच्चे सुर की नेमत। अस्सी बरस की पाँचों वक्त वाली नमाज़ इसी सुर को पाने की प्रार्थना में ख़र्च हो जाती है। लाखों सजदे इसी एक सच्चे सुर की इबादत में ख़ुदा के आगे झुकते हैं। वे नमाज़ के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते हैं—मेरे मालिक, एक सुर बख़्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।

(*i*) 'बिस्मिल्ला खाँ' ख़ुदा से सुर ही क्यों माँगते हैं?

(*ii*) इस सुर को पाने के लिए बिस्मिल्ला खाँ को क्या-क्या करना पड़ता था?

(*iii*) सुर में 'आँसू लाने वाली तासीर' से क्या तात्पर्य है? वे ऐसा क्यों चाहते हैं?

उत्तर—(*i*) 'बिस्मिल्ला खाँ' सुर के सच्चे साधक हैं। वे संगीत में पूर्णता लाने के लिए खुदा से सच्चा सुर माँगते हैं। वे चाहते हैं कि उनको ऐसा सुर प्राप्त हो जाए कि उसे सुनकर संगीत-प्रेमियों की आँखों से ख़ुशी के अगाढ़ आँसू निकल पड़ें।

(*ii*) इस (सच्चे सुर को पाने के लिए) बिस्मिल्ला खाँ पाँचों वक्त वाली नमाज़ अदा करते थे। लाखों सजदे इसी एक सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते थे। वे नमाज़ के बाद सच्चे सुर को पाने के लिए गिड़गिड़ाते थे। वे गिड़गिड़ाते हुए कहते थे-'मेरे मालिक, एक सुर बख्श दे।'

(*iii*) सुर में 'आँसू लाने वाली तासीर' से तात्पर्य है-व्यापक प्रभाव पड़ना। सच्चे सुर का इतना व्यापक प्रभाव पड़े कि संगीत प्रेमियों की आँखों से प्रेम और आनन्द के कारण खुशी के आँसू छलक उठें। इसे ही सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू कहकर सम्बोधित किया गया है। वे ऐसा इसलिए चाहते थे कि संगीत-प्रेमियों को संगीत के नए सुर का उपहार भेंट कर सकें।

14. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×3=9

(क) 'स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं'—कुतर्कियों की इस दलील का खंडन द्विवेदी जी ने कैसे किया है?

(ख) 'लखनवी अंदाज़' में लेखक को नवाब साहब के किन हाव-भावों से महसूस हुआ कि नवाब उनसे बातें नहीं करना चाहते।

(ग) ''पिता के ठीक विपरीत थी माँ''—मन्नू भंडारी के इस कथन से उभरने वाले माँ के व्यक्तित्व की **तीन** विशेषताएँ लिखिए।

(घ) बाल गोबिन की उन **तीन** विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनके कारण उन्हें 'भगत' कहा जाने लगा।

उत्तर—(क) देखें 2002 (Set I) का प्रश्न 14 (*iv*). [पृष्ठ 8

(ख) देखें 2003 (Set II) का प्रश्न 14 (*i*). [पृष्ठ 36

(ग) **''पिता के ठीक विपरीत थी माँ''—**लेखिका मन्नू भण्डारी के इस कथन के आधार पर उनकी माँ के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं :

(*i*) लेखिका के पिता सुशिक्षित थे किन्तु माता अशिक्षित थीं।

(*ii*) वे सहनशीलता के लिए प्रसिद्ध थीं क्योंकि अपने पति के क्रोध को सह लेती थीं तथा उन्होंने कभी भी विद्रोह का स्वर नहीं निकाला था।

(*iii*) वे कर्त्तव्य परायण थीं। पति की सेवा के साथ-साथ बच्चों की हर फरमाइश को पूरा करने में तत्पर रहती थीं।

(*iv*) लेखिका की माँ के व्यक्तित्व में धर्मशीलता पृथ्वी से भी बढ़कर थी। वे किसी भी परिस्थिति में घबराती नहीं थीं।

(घ) **बाल गोबिन भगत की विशेषताएँ—**बाल गोबिन की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं जिनके कारण गृहस्थ होते हुए भी वे (भक्त) भगत कहलाते थे :

(*i*) वे संत की तरह सत्य बोलते थे, असत्य भाषण से हमेशा दूर रहते थे।

(*ii*) वे सभी के साथ दो-टूक व्यवहार करते थे, किसी के साथ लाग-लपेट नहीं रखते थे।

(*iii*) वे प्रतिदिन ब्रहममुहूर्त में उठकर नदी जाते थे। वहाँ से शौच, स्नान से निवृत्त होकर गाँव के बाहर पोखर पर बैठकर खंजड़ी लेकर कबीर के पदों को गाते थे। प्रतिदिन शाम को अपने घर के आँगन में संगीत प्रेमियों के साथ कबीर के पद गाते थे।

15. (क) लेखक ने कामिल बुल्के को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' क्यों कहा है? 3

(ख) 'संस्कृति' पाठ में लेखक ने सभ्यता और संस्कृति को कैसे स्पष्ट किया है? 2

उत्तर—(क) फादर बुल्के मानवता के पुजारी थे। वे ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखते थे। वे प्रत्येक धर्म को सम्मान की नज़र से देखते थे। वे संन्यासी होते हुए भी लोगों से आत्मीयता का लगाव रखते थे। वे एक बार जिससे सम्बन्ध बना लेते थे उसे अंत तक निभाते थे। दु:ख, तकलीफ़ में पहुँचकर लोगों को सांत्वना देना फादर बुल्के का स्वभाव बन गया था। वे देवदार के समान अपने आत्मीय जनों को छत्रछाया प्रदान करते थे। फादर बुल्के के हृदय में मानव-मात्र के प्रति करुणा और संवेदना का भाव कूट-कूटकर भरा था। ऐसे गुण मानवता के पथ-प्रदर्शक होते हैं। उन्हें दिव्य गुण अथवा दिव्य चेतना के गुण कहा जा सकता है। इस आधार पर लेखक ने फादर कामिल बुल्के को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' कहा है।

(ख) 'संस्कृति' पाठ के आधार पर लेखक ने सभ्यता और संस्कृति को नए ढंग से परिभाषित किया है। उसके अनुसार किसी नई वस्तु की खोज संस्कृति है, खोज करने वाला सभ्यता है तथा प्रयोग में लेने वाले सभ्य व्यक्ति हैं। यथा-

आग की खोज करने वाला संस्कृत व्यक्ति था तथा आग उसकी संस्कृति। सुई-धागे का प्रथम आविष्कर्त्ता (खोज करने वाला) संस्कृत व्यक्ति है तथा सुई-धागा उसकी संस्कृति है। आग का प्रयोग करने वाले तथा सुई-धागा का प्रयोग करने वाले सभ्य कहलाएँगे और आग तथा सुई-धागा हमारे लिए सभ्यता कहलाएगीं।

16. निम्नलिखित में से किसी *एक* प्रश्न का उत्तर लिखिए : 4

(क) 'मैं क्यों लिखता हूँ?' के लेखक ने स्वयं को हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कैसे महसूस किया है?

(ख) 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!' पाठ के शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- (क) देखें 2006 (Set III) का प्रश्न 17 (*iv*). [पृष्ठ 101

(ख) झुलनी सुहागिन का प्रतीक है। दुलारी शरीर से नहीं किन्तु आत्मा से टुन्नू को प्यार करती थी। वह मन ही मन टुन्नू के प्रेम से, उसकी गायकी से प्रभावित होकर उसे अपना दिल दे बैठी थी। जिस समय देश की स्वतंत्रता के लिए टुन्नू अंग्रेज़ी सरकार का विरोध कर रहा था उसी समय उसके सीने पर जूते से चोट पहुँचायी गयी। टुन्नू के मुँह से खून निकला और उसने अपने प्राण त्याग दिए।

दुलारी को नाचने-गाने के लिए बुलाया गया तब उसने गाते-गाते यही पंक्ति दोहराई-'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा।' अत: इसी जगह (टुन्नू) मेरा प्रेमी मारा गया जिससे वैधव्य प्राप्त हुआ। इसके लिए कौन ज़िम्मेदार है?

'झुलनी हेराना' अर्थात विधवा बनना- इस आधार पर पाठ का शीर्षक प्रतीकात्मक है जो सार्थक एवं सटीक है।

17. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं *तीन* के उत्तर लिखिए : 3×2=6

(क) 'माता का आँचल' पाठ में बच्चे बरात का जुलूस कैसे निकालते थे?

(ख) 'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ में 'कोई भी नाक फ़िट होने क़ाबिल नहीं निकली' यह कह कर लेखक किस ओर संकेत करता है?

(ग) 'साना-साना हाथ जोड़ि...' पाठ के आधार पर बताइए कि लोंग स्टोक में लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक जैसी क्यों लगी?

(घ) 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!' पाठ में टुन्नू ने दुलारी को कैसी धोती दी और क्यों?

उत्तर—(क)'माता का आँचल' पाठ में बच्चे चूहेदानी की पालकी बना लेते थे और बरात का जुलूस निकालते थे। वे एक चबूतरे से दूसरे चबूतरे तक जुलूस ले जाते थे। स्वयं ही बराती

होते थे और स्वयं ही घराती भी बन जाते थे। वे कनस्तर का बाजा बजाते हुए झूमते-नाचते हुए शान से बरात लेकर जाते थे।

(ख) 'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ में 'कोई भी नाक फ़िट होने के क़ाबिल नहीं निकली' यह कहकर लेखक यह संकेत करता है कि भारतीयों की नाक बड़ी और जॉर्ज पंचम की नाक छोटी निकली। यहाँ तक कि बच्चों की नाक भी जॉर्ज पंचम की नाक के आकार की नहीं निकली। यहाँ नाक सम्मान का प्रतीक है। लेखक यह सिद्ध करना चाहता है कि भारतीयों के सम्मान-इज़्ज़त प्रतिष्ठा के आगे अंग्रज़ों की मान-प्रतिष्ठा नहीं थी।

(क) देखें 2003 (Set I) का प्रश्न 17 (*i*). [पृष्ठ 31

(घ) 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!' पाठ में टुन्नू ने दुलारी को खादी की धोती दी थी क्योंकि वह एक देश-भक्त था। वह दुलारी से आत्मिक प्रेम करता था। वह चाहता था कि देश की स्वतंत्रता के लिए समाज का उपेक्षित वर्ग भी सक्रिय भागीदारी निभाए। उस समय स्वदेशी वस्त्र अपनाने पर तथा विदेशी वस्त्रों की होली जलाने पर बल दिया जाता था। इसलिए टुन्नू ने दुलारी को खादी की धोती दी थी।

Hindi (Course A)—2009
Comptt.
Set II—Outside Delhi

निर्धारित समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

निम्न प्रश्नों के अतिरिक्त शेष सभी प्रश्न Set I में पूछे गए हैं।

खण्ड 'ख'

3. आपका मित्र किसी दुर्घटना में घायल हो गया और उसे अस्पताल में दाखिल होना पड़ा। कुशल-क्षेम पूछते हुए उसे एक सांत्वना पत्र लिखिए। **5**

उत्तर—

परीक्षा भवन

25-09-09

प्रिय मित्र सुरेश

सप्रेम नमस्ते

कल ही सुभाषचन्द्र का फोन आया था। उसने बताया कि शिमला यात्रा में तुम्हारी कार दुर्घटनाग्रस्त हो गई। दुर्घटना के कारण तुम घायल हो गए जिससे अस्पताल में दाखिल होना पड़ा। इस समय तुम्हारी तबीयत कैसी है। इसे विधि का विधान मानकर स्वीकार करो और ईश्वर का धन्यवाद करो जिसने तुम्हारी जान बचाई।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हें शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण रूप से स्वस्थ बनाएं। तुम पहले जैसे स्वस्थ होकर अपना दैनिक कार्य सुचारू रूप से करने लगो।

शेष कुशल। चाचा जी एवं चाची जी को प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र

राजीव

अथवा

आपके क्षेत्र की डाक नियमित रूप से नहीं बँट रही है। डाकिए की लापरवाही की शिकायत करते हुए क्षेत्र के पोस्ट-मास्टर को पत्र लिखिए।

उत्तर—

प्रेषक—राजेश

286 आर, मॉडल टाउन

पानीपत, हरियाणा

सेवा में

पोस्ट मास्टर महोदय

महावीर कॉलोनी डाकघर

पानीपत

विषय : डाक-वितरण में अनियमितता के सम्बन्ध में पत्र

मान्यवर

निवेदन है कि इस मुहल्ले में इधर कई-कई दिन बाद पत्र मिलता है। डाकघर की मुहर के अनुसार जो दिनाँक अंकित होती है, उसके एक सप्ताह बाद पत्र मिलता है। इसी प्रकार बिजली तथा टेलीफोन के बिल कार्यालय से जारी की गई तिथि के आठ-दस दिन बाद भी नहीं मिलते। भुगतान की अंतिम तिथि से एक दिन पूर्व बिल दिए जाते हैं। बार-बार कहने का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता। डाकिया हमेशा नए-नए बहाने बनाता रहता है। इस प्रकार उसकी लापरवाही और अपेक्षा दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।

आप से निवेदन है कि ऐसे लापरवाह डाकिए के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करके डाक-वितरण व्यवस्था को सुचारू बनाने का कष्ट करें।

सधन्यवाद

भवदीय

राजेश

दिनाँक : 10 अगस्त 2009

खण्ड 'ग'

5. (क) निम्नलिखित वाक्यों में आए क्रिया-पदों को छाँटिए और कर्म के अनुसार उनके भेद लिखिए :

(*i*) मोहिनी ने पाठ याद कर लिया है। **1**

(*ii*) सत्यप्रकाश बहुत हँसता है। 1

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में अव्यय छाँटकर भेद बताइए :

(*i*) मेरे घर के पीछे मेरा मित्र रहता है। 1

(*ii*) एक बूँद सहसा उछली। 1

उत्तर—(क) (*i*) याद कर लिया है—सकर्मक क्रिया

(*ii*) हँसता है—अकर्मक क्रिया

(ख) (*i*) के पीछे—सम्बंध बोधक अव्यय

(*ii*) सहसा —क्रिया विशेषण

6. रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए :

(*i*) मेरा भाई <u>सोहन</u> अपना पाठ याद कर लेगा। 1

(*ii*) <u>तुम</u> यहाँ आओ। 1

उत्तर—सोहन—व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्त्ता कारक,
'याद कर लेगा' क्रिया का कर्त्ता।

तुम—पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, कर्त्ता कारक,
'आओ' क्रिया का कर्त्ता।

7. निर्देशानुसार वाक्य बदलिए :

(*i*) जो बच्चा नए कपड़े पहने था वह चला गया। (सरल वाक्य में) 1

(*ii*) राम के घर पहुँचने पर ही मैं आया हूँ। (संयुक्त वाक्य में) 1

(*iii*) खाना खाकर सीता सो गई। (मिश्र वाक्य में) 1

उत्तर—(*i*) नए कपड़े पहनने वाला बच्चा चला गया।

(*ii*) राम घर पहुँचा है और मैं आया हूँ।

(*iii*) सीता ने जब खाना खाया तब सो गई।

8. निर्देशानुसार वाच्य बदलिए :

(*i*) संसद ने बजट पारित कर दिया। (कर्मवाच्य में) 1

(*ii*) क्या तुम दौड़ सकोगे? (भाववाच्य में) 1

(*iii*) उससे खाया नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में) 1

उत्तर—(*i*) संसद द्वारा बजट पारित कर दिया गया।

(*ii*) क्या तुमसे दौड़ा जा सकेगा?

(*iii*) वह नहीं खा पाता।

खण्ड 'घ'

12. नीचे दिए काव्यांशों में से किसी *एक* पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×5=5

(क) डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झिंगूला सोहै तन छबि भारी दै।
पवन झूलावै, केकी-कीर बतरावैं 'देव',
कोकिल हलावै-हुलसावै कर तारी दै॥

(*i*) उक्त पंक्तियाँ किस भाषा में लिखी गई हैं?

(*ii*) उक्त पंक्तियों में छंद कौन-सा है?

(*iii*) 'केकी-कीर बतरावैं' में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए।

(*iv*) हवा, मोर, तोता और कोयल की क्या भूमिका दिखाई गई है?

(*v*) रूपक अलंकार का *एक* उदाहरण छाँटकर लिखिए।

उत्तर—(क) (*i*) उक्त पंक्तियाँ ब्रजभाषा में लिखी गई हैं।

(*ii*) उक्त पंक्तियों में कवित छंद है।

(*iii*) *केकी-कीर बतरावैं* में अनुप्रास तथा मानवीकरण अलंकार हैं।

(*iv*) हवा पालने को झुलाती है, मोर तथा तोता बातचीत करते हैं, कोयल बालक वसंत को लाड़-प्यार करती है और ताली बजाकर बालक वसंत को रिझाती रहती है।

(*v*) रूपक अलंकार (1) डाल द्रुम पलना (2) बिछौना नव पल्लव (3) सुमन झिंगूला।

(ख) गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान।

(*i*) काव्यांश की भाषा पर टिप्पणी कीजिए।

(*ii*) उन पंक्तियों को छाँटकर लिखिए जिनमें रूपक अलंकार है।

(*iii*) संगतकार किसे कहते हैं? वह क्या करता है?

(*iv*) 'अनहद' में भटकने से क्या तात्पर्य है?

(*v*) भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान।

उत्तर—(*i*) काव्यांश की भाषा खड़ी बोली तथा वर्णनात्मक प्रतीकात्मक शैली है।

(*ii*) *गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में*
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में

(*iii*) संगतकार मुख्य गायक का साथ देने वाला सहायक गायक (छोटा, सहयोगी गायक कलाकार) होता है। वह मुख्य

गायक का साथ देता है। मुख्य गायक के स्वर में अपना स्वर मिलाता है।

(*iv*) अनहद में भटकने से तात्पर्य है- एक तान या सरगम की सीमा को छोड़कर दूसरी तान या सरगम में उलझ जाना। सरगम के अंतरे को भूलकर दूसरे अंतरे में जाना तथा उसमें उलझ जाना।

(*v*) जिस प्रकार छोटा भाई, सहायक या सेवक बड़ों का सामान समेट कर सुरक्षित रखता है, उसी प्रकार संगतकार मुख्य गायक के अंतरे के जंगलों में उलझने पर स्थाई को सँभाले रहता है।

13. नीचे दिए गए गद्यांशों में से किसी *एक* गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×2=6

(क) लेकिन आदत से मजबूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ़ उठ गईं। कुछ ऐसा देखा कि चीखे, रोको! जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक मारे। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रुकते-न-रुकते हालदार साहब जीप से कूद कर तेज़-तेज़ कदमों से मूर्ति की तरफ़ लपके और उसके ठीक सामने जाकर अटेंशन खड़े हो गए।

मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। हालदार साहब भावुक हैं। इतनी-सी बात पर उनकी आँखें भर आईं।

(*i*) हालदार साहब किस आदत से मजबूर थे? वे क्यों चीखे?

(*ii*) 'इतनी-सी बात पर' से क्या अभिप्राय है? हालदार की आँखें क्यों भर आईं?

(*iii*) मूर्ति के प्रति हालदार के भावनात्मक लगाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—(क) (*i*) हालदार साहब जब भी कस्बे के चौराहे से गुज़रते, वहाँ रुक कर पान खाते और नेताजी की मूर्ति को ध्यान से देखते। यह उनकी आदत बन गयी थी।

हालदार साहब ने पहले ड्राइवर को चौराहे पर जीप न रोकने का आदेश दिया था किन्तु चौराहा आते ही मूर्ति पर लगा सरकण्डे का चश्मा दिखा। जिसे देखते ही उन्होंने चीखकर ड्राइवर को जीप रोकने के लिए कहा।

(*ii*) 'इतनी-सी बात पर' से अभिप्राय है-सरकंडे का चश्मा नेता जी की मूर्ति की आँखों पर लगा देखकर भावुक हो जाना।

हालदार साहब की आँखें भावुकता के कारण भर आईं क्योंकि बच्चों द्वारा सरकंडे का चश्मा बनाना तथा नेता जी की मूर्ति की आँखों पर लगाना उनकी श्रद्धा और सम्मान की भावना का परिचायक है। यही भावुकता हालदार साहब की आँखों से आँसू बनकर बह निकली।

(*iii*) नेता जी की मूर्ति के प्रति हालदार साहब का भावनात्मक लगाव था। वे जब भी कस्बे के चौराहे से गुज़रते थे तब जीप रोककर नेता जी मूर्ति के सामने पान वाले के पास पान खाते थे। मूर्ति की आँखों पर चश्मा देखकर प्रसन्न होते थे। इस प्रकार हालदार साहब नेता जी को अपनी श्रद्धा समर्पित करते थे।

(ख) एक दिन शिष्या ने डरते-डरते टोका, ''बाबा! आप यह क्या करते हैं, इतनी प्रतिष्ठा है आपकी। अब तो भारत रत्न भी मिल चुका है आपको, यह फटी तहमद न पहना करें। अच्छा नहीं लगता, जब भी कोई आता है आप इसी फटी तहमद में सबसे मिलते हैं।'' खाँ साहब मुसकराए, लाड़ से भरकर बोले, ''धत्! पगली, ई भारत रत्न हमको शहनईया पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं। तुम लोगों की तरह बनाव-सिंगार देखते रहते तो हो चुकती शहनाई। तब क्या खाक रियाज़ हो पाता। ठीक है बिटिया, आगे से नहीं पहनेंगे पर इतना बताए देते हैं कि मालिक से यही दुआ है—फटा सुर न बख़्शें।''

(*i*) शिष्या ने खाँ साहब को तहमद पहनने से क्यों मना किया?

(*ii*) गद्यांश के आधार पर बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की *दो* विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(*iii*) आशय स्पष्ट कीजिए—''मालिक से यही दुआ है-फटा सुर न बख़्शें।''

उत्तर—(*i*) शिष्या ने आधुनिकता से प्रभावित होकर खाँ साहब को तहमद पहनने से मना किया था। एक तो (तहमद) लुंगी, वह भी फटी हुई। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति से तहमद में मिलना अपनी प्रतिष्ठा को कम करने जैसा है। यह सोचकर शिष्या ने खाँ साहब को तहमद में मिलने से रोका था।

(*ii*) बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की विशेषताएँ :

1. बिस्मिल्ला खाँ वेश-भूषा अथवा बनाव-श्रृंगार के प्रति लगाव नहीं रखते थे।

2. वे एक चित्त या एकाग्र होकर रियाज़ (अभ्यास) को महत्त्व देते थे।

3. वे शिष्यों की भावना को आघात नहीं पहुँचाते थे। उनके सुझाव को सहृदय से सुनते तथा मान लेते थे।

(*iii*) ''*मालिक से यही दुआ है—फटा सुर न बख़्शें।*''

इस पंक्ति का यह आशय है कि बिस्मिल्ला खाँ अपनी शिष्या

द्वारा फटी लुंगी पर टोकने के बाद कहने लगे कि फटी लुंगी से कोई हानि नहीं है। वह तो फिर भी मिल जाएगी। मालिक की कृपा से सुर बना रहे, सुर न फटने पाए क्योंकि सुर ही मेरी पहचान है। सुर के फट जाने पर कोई कद्र नहीं रहेगी।

15. (क) 'संस्कृति' पाठ में 'संस्कृति' और 'सभ्यता' में अंतर स्पष्ट करने के लिए क्या उदाहरण दिया गया है? 2

उत्तर—(क) देखें 2009 (I Outside Delhi) का प्रश्न 14(ख). [पृष्ठ 197

Hindi (Course A)—2009

Comptt.

Set III—Outside Delhi

निर्धारित समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

निम्न प्रश्नों के अतिरिक्त शेष सभी प्रश्न Set I तथा Set II में पूछे गए हैं।

खण्ड 'ख'

3. सभ्य और शिष्ट व्यवहार करने वाले किसी बस कंडक्टर की प्रशंसा करते हुए राज्य परिवहन निगम के महाप्रबंधक को एक पत्र लिखकर आग्रह कीजिए कि वे अन्य कंडक्टरों को उससे प्रेरणा लेने की व्यवस्था करें। 5

उत्तर—

प्रेषक

शैलेन्द्र

डी 36, रोहिणी

दिल्ली

सेवा में

श्रीमान् महाप्रबन्धक

राज्य परिवहन निगम,

दिल्ली

विषय: बस कंडक्टर के व्यवहार की प्रशंसा के सम्बन्ध में पत्र

महोदय

सूचनार्थ निवेदन है कि पिछली रात मैं अपनी बीमार एवं बूढ़ी दादी को लेकर आ रहा था। मुझे रास्ते में बस बदलनी पड़ी क्योंकि हमारी बस खराब हो गई थी। जब भी मैं किसी बस को रुकने के लिए हाथ देता, असफलता हाथ लगती। उसी समय डी०टी०सी० की बस न० 555 आती दिखाई पड़ी। हाथ देते ही कंडक्टर ने सीटी बजाई, चालक ने बस रोक दी। कंडक्टर बस से नीचे उतरा, उसने दादी का हाथ पकड़कर सहारा देते हुए बस में पहुँचाया। इसके बाद आगे बैठे दो-तीन नवयुवकों से सीट हाथ जोड़कर खाली करायी तथा दादी को सीट पर लेटाया। इसके बाद उन्हें पानी भी पिलाया। खड़े यात्रियों से कष्ट के लिए क्षमा याचना की। पूछने पर नाम बताया—मनोहर।

ऐसे सभ्य एवं शिष्ट व्यवहार करने वाले कंडक्टर मनोहरजी की जितनी प्रशंसा करें, थोड़ी है। आप यह सूचना देकर अन्य कंडक्टरों को भी ऐसा व्यवहार करने की प्रेरणा प्रदान कीजिए।

सधन्यवाद

भवदीय

शैलेन्द्र

दिनाँक : 28 अगस्त, 2009

अथवा

आप अपना जन्मदिन मना रहे हैं। इस बार आपने अपने मित्रों को आमंत्रित किया है। मित्र-मंडली द्वारा मनोरंजक कार्यक्रम भी आयोजित किया जाएगा। पत्र में पूरा विवरण लिखते हुए मित्र को आमंत्रित कीजिए।

उत्तर—

221, कैवल्यधाम,

संकटमोचन

दुर्गाकुण्ड

वाराणसी

दिनांक : 28 अगस्त, 2009

प्रिय मित्र रमेश

सप्रेम नमस्ते

विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी 8 सितम्बर को मैं आप को अपने जन्म दिवस पर सादर आमंत्रित करता हूँ। हो सके तो एक दिन पहले आने का कष्ट करें। मैंने अन्य मित्रों को भी पत्र प्रेषित कर दिया है। सभी मित्र मिलकर सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न करेंगे। कार्यक्रम इस प्रकार है—

प्रात: 9:00 बजे से *सुन्दर काण्ड* पाठ

11:00 बजे—भोग

11:30 बजे—दोपहर का भोजन

2:30 बजे—सांस्कृतिक कार्यक्रम

6:30 बजे—केक काटना

7:30 बजे—रात्रि भोजन।

तुम्हारा मित्र

राकेश

खण्ड 'ग'

6. निर्देशानुसार वाच्य बदलिए :

(*i*) सरकार बाढ़ पीढ़ितों की सहायता कर रही है। (कर्मवाच्य में) **1**

(*ii*) मुझसे चला नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में) **1**

(*iii*) बड़ों की बात पर हँसते नहीं हैं। (भाववाच्य में) **1**

उत्तर—(*i*) सरकार द्वारा बाढ़ पीड़ितों की सहायता की जा रही है।

(*ii*) मैं नहीं चल पाता।

(*iii*) बड़ों की बात पर हँसा नहीं जाता है।

7. निर्देशानुसार वाक्य बदलिए : 1+1+1=3

(*i*) जो भिखारी यहाँ आया था, वह चोर था। (सरल वाक्य में)

(*ii*) खाना खाकर सत्येन्द्र सो गया। (संयुक्त वाक्य में)

(*iii*) मेरे कमरे में एक पुरानी घड़ी है। (मिश्र वाक्य में)

उत्तर—(*i*) यहाँ आने वाला भिखारी चोर था।

(*ii*) सत्येन्द्र ने खाना खाया और सो गया।

(*iii*) मेरे कमरे में जो घड़ी है वह पुरानी है।

8. निम्नलिखित पदों में रेखांकित अंश का पद-परिचय दीजिए :

(*i*) बच्चा सो रहा है। **1**

(*ii*) उसने अभी-अभी खाना खाया है। **1**

उत्तर—(*i*) **बच्चा**—जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एक वचन, कर्ता कारक, 'सो रहा है' क्रिया का कर्ता

(*ii*) **खाया है**—'खा' धातु, सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एक वचन, भूतकाल, कर्तृवाच्य, 'उसने' कर्ता की क्रिया, 'खाना' कर्म की क्रिया।

9. (क) निम्नलिखित वाक्यों में आए क्रिया-पदों को छाँटिए और कर्म के अनुसार उनके भेद लिखिए :

(*i*) मोहन घर गया। **1**

(*ii*) सुकुमार ने किताब पढ़ ली है। **1**

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में अव्यय छाँटकर उनका भेद भी बताइए :

(*i*) पेड़ के नीचे गाय खड़ी है। **1**

(*ii*) वह अभी-अभी स्कूल पहुँचा है। **1**

उत्तर—(क) (*i*) गया—अकर्मक क्रिया

(*ii*) पढ़ ली है—सकर्मक क्रिया

(ख) (*i*) नीचे—स्थानवाचक क्रियाविशेषण

(*ii*) अभी-अभी—कालवाचक क्रियाविशेषण

खण्ड 'घ'

12. नीचे दिए काव्यांशों में से किसी *एक* पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×5=5

(क) पूरित पराग सों उतारो करै राई नोन,
कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै॥

(*i*) उक्त काव्यांश किस भाषा में रचित है?

(*ii*) उक्त पंक्तियाँ किस छंद में लिखी गई हैं?

(*iii*) रूपक अलंकार का *एक* उदाहरण छाँटकर लिखिए।

(*iv*) बसंत रूपी बालक की नज़र कैसे उतारी जा रही है?

(*v*) बालक बसंत को नींद से जगाने के अंदाज़ पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर—(*i*) उक्त काव्यांश ब्रज भाषा में रचित है।

(*ii*) उक्त पंक्तियाँ कवित छंद में लिखी गई हैं।

(*iii*) रूपक अलंकार—

(1) कंजकली नायिका (2) लतान सिर सारी दै।

(*iv*) कमल की कली रूपी नायिका लतारूपी साड़ी सिर पर ओढ़कर पराग रूपी राई, नमक, मिर्च लेकर बालक बसंत की नजर उतार रही है।

(*v*) बालक बसंत कामदेव रूपी राजा का राजकुमार है। अत: राजकुमार को जगाने के लिए सेवक / नौकर-चाकर होते हैं। इस आधार पर गुलाब रूपी सेवक चटकारी देकर (चुटकी बजाकर) बालक वसंत को जगा रहा है।

(ख) मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाज़ सुंदर कमज़ोर काँपती हुई थी
वह मुख्य गायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार
मुख्य गायक की गरज में
वह अपनी गूँज मिलाता आया है

(*i*) काव्यांश की भाषा पर टिप्पणी कीजिए।

(*ii*) गायक के स्वर की उपमा किससे दी गई है और क्यों?

(*iii*) आवाज़ के लिए प्रयुक्त विशेषणों की सुंदरता पर टिप्पणी कीजिए।

(*iv*) संगतकार किसे कहते हैं? वह क्या करता है?

(*v*) मुख्य गायक की आवाज़ को 'गरज' और संगतकार की आवाज़ को 'गूँज' क्यों कहा है?

उत्तर—(*i*) काव्यांश की भाषा खड़ी बोली है। इसमें उर्दू शब्दों का प्रयोग हुआ है साथ ही वर्णनात्मक शैली का भी प्रयोग किया गया है।

(*ii*) गायक के स्वर की उपमा चट्टान से दी गई है क्योंकि मुख्य गायक का स्वर संगतकार के स्वर से भारी होता है। उसका स्वर ही उसकी अलग पहचान बनाता है।

(*iii*) कवि ने संगतकार की आवाज़ की विशेषता के लिए तीन विशेषणों का प्रयोग किया है –

1. सुन्दर 2. कमज़ोर 3. काँपती।

कवि द्वारा प्रयुक्त विशेषण सार्थक बन पड़े हैं। इनके प्रयोग द्वारा काव्य में नवीनता एवं रोचकता आ गई है।

(*iv*) संगतकार सहायक गायक कलाकार को कहते हैं। संगतकार उलझ जाने पर स्थायी को सँभाले रहता है। अपने प्रयास से वह मुख्य गायक को सफलता दिलाता है।

(*v*) मुख्य गायक की आवाज़ को गरज तथा संगतकार की आवाज़ को गूँज इसलिए कहा गया है क्योंकि मुख्य गायक ही प्रधान होता है जिसके नाम से पार्टी का नाम चलता है। उसकी आवाज़ जोश से भरी होती है इसलिए गरज, दहाड़ तथा चट्टान जैसी कहा गया है। संगतकार छोटा कलाकार होता है। अत: उसका स्वर धीमा होता है। इसलिए उसकी आवाज़ को गूँज कहा गया है।

13. नीचे दिए गए गद्यांशों में से किसी *एक* गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×2=6

(क) अगली बार भी मूर्ति की आँखों पर चश्मा नहीं था। हालदार साहब ने पान खाया और धीरे-से पान वाले से पूछा—क्यों भाई, क्या बात है? आज तुम्हारे नेता जी की आँखों पर चश्मा नहीं है? पान वाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुका कर धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला—साहब! कैप्टन मर गया।

और कुछ नहीं पूछ पाए हालदार साहब। कुछ पल चुपचाप खड़े रहे, फिर पान के पैसे चुका कर जीप में आ बैठे और रवाना हो गए।

(*i*) मूर्ति किसकी थी? उसकी आँखों पर चश्मा क्यों नहीं था?

(*ii*) पान वाला उदास क्यों हो गया?

(*iii*) हालदार साहब और पान वाले के स्वभाव में क्या समानता दिखाई पड़ती है?

उत्तर—(क) (*i*) मूर्ति नेताजी सुभाषचंद्र बोस की थी। उनकी आँखों पर चश्मा इसलिए नहीं था कि चश्मा लगाने वाला कैप्टन मर गया था। वही मूर्ति पर चश्मा लगाया करता था।

(*ii*) पानवाला भावुक व्यक्ति था। उसने कैप्टन चश्मेवाले की याद आने से उदास होकर भावुकता का परिचय दिया क्योंकि हालदार साहब ने पूछा कि नेता जी की आँखों पर चश्मा क्यों नहीं है तब उत्तर देते समय पानवाला उदास हो गया था।

(*iii*) हालदार साहब और पान वाले के स्वभाव में सबसे बड़ी समानता थी कि वे दोनों भावुक थे। भावुकता के कारण सरकण्डे का चश्मा देखकर हालदार साहब की आँखें भर आईं। कैप्टन चश्मे वाले के मरने की सूचना देते समय पानवाला अपनी धोती के किनारे से आँखें पोंछने लगा।

(ख) काशी आज भी संगीत के सुर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। काशी में मरण भी मंगल माना गया है। काशी आनन्द कानन है। सबसे बड़ी बात है कि काशी के पास उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जैसा लय और सुर की तमीज़ सिखाने वाला नायाब हीरा रहा है जो हमेशा से दो कौमों को एक होने व आपस में भाई-चारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

(*i*) काशी में मरण को भी मंगल क्यों माना जाता है?

(*ii*) खाँ साहब के चरित्र की किन विशेषताओं का उल्लेख हुआ है?

(*iii*) संगीत और काशी के सम्बन्धों पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर—(*i*) काशी भगवान शिव की नगरी है। शिव का अर्थ है—कल्याण। जो देव हमेशा जन-जन का कल्याण करता है, उसकी नगरी काशी में रहने वाले का कल्याण स्वाभाविक हो जाता है। काशी में जीवन में भक्ति तथा मरने के बाद मुक्ति मिलती है। इसी आधार पर काशी में मरण को भी मंगल माना गया है।

(*ii*) खाँ साहब के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए लेखक ने उन्हें लय और सुर की तमीज़ सिखाने वाला नायाब हीरा कहा है। दूसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता यह बताई है कि वे हमेशा से दो कौमों को एक होने तथा आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देते रहते थे।

(*iii*) संगीत और काशी के सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हुए लेखक ने कहा है कि काशी आज भी संगीत के सुर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। इस प्रकार संगीत और काशी का सम्बन्ध अटूट है। काशी में रात-दिन संगीत-साधना सुनने को, देखने को मिलती है। ब्रह्म मुहूर्त से मंदिरों में भजन-कीर्तन आरंभ होता है और देर रात तक गाने-बजाने के कार्यक्रम जगह-जगह पर चलते रहते हैं।